



आशा भोंसले

2758

ASHA ARCHIVES

कलविलकनु॥



२३ न मायी वलु म हा ना ख वा य ४॥

॥ न च मया श्रुत म क स्मिन् सम य र ग वान व ज

स ल ४ स र्व क थ ग क का य वा क वि रु द द य व ज ध नि य वि र ग वि जे हो व ४॥ ॥ ज न

को श्र व ज थ गि नी क ज थ गी नी ग ले ४॥ ॥ न च थ ॥ ॥ अ सा व न व ज थ गि नी

॥ यी का व न व ज थ गि नी ॥ न का व न व ज थ गि नी ॥ आ मा व न व ज थ गि नी ॥ १

भा ह व द्या व ज थ गि नी पि पु न व द्या व ज थ गि नी ना ग व द्या व ज थ गि नी रु द्या न व द्या

॥ आ मा व ल न व ज थ गि न्या ॥ भा ह व द्या व ज थ गि न्या ॥

॥ अ वं प म र्वे थ गि थ गि नी

का ठि नि यू र म क स रू से ४॥ अ थ ख ल र ग वान व ज स ल ४ क र्ण व ल स मा धि स मा य ध द म

दा ज हा न ॥ स वा हा व वि नि र्म क व ड या न दे क क ल्प ४॥ नि ष्य य के ख रू था हं : स र्व स क ल्प

व र्जि क ४॥ मा न्न ज्ञान कि थ मू टा ४ स र्व यै स्वा यु धि स्मि क ४॥ क र्मा म र्द हि ना थ य य के का :

प्र धं स र्मि क ४॥ अ थ र ग व नी व ज धा ली ध नी द्र य व जी स मा धि स मा य ध द मू दा ज हा ॥

क
ल
वी

३॥ शुन्यमाकनूष्महिना दिव्यकामसखस्त्रिंशं सर्वकल्पविहीनार्हनिःपयंवानिलाकला
मान्नजानमिथानार्थः सर्वस्त्रीदहसीस्त्रिंशं नासांमहर्हिनाथययंवाकात्रधर्मस्त्रिंशः॥
अथरुगवानुक्तकृष्णलागाः ४६ रुगवर्गद्विषवर्जीवंचयित्वासमातिग्यत्रामन्दयकस्मा
दवीदवीमहानम्यंरुस्यंवायिइलहं॥सात्रासात्रकनंथष्टं सर्ववृक्षः ४७ रुगवर्ग
अमहामंनुक्तकृष्णलागाः ४८ रुगवर्गद्विषवर्जीवंचयित्वासमातिग्यत्रामन्दयकस्मा
दवीदवीमहानम्यंरुस्यंवायिइलहं॥सात्रासात्रकनंथष्टं सर्ववृक्षः ४९ रुगवर्ग

2

दं कुरु मष्टममथुलस्य हि ॥ नान्यमथुलपविष्टस्य गंजनाजं डुदभयम् ॥ मथुलस्युवावस्यः
 यविष्टायः समाहितः ॥ वृद्धायत्तयनाव ॥ कस्य कुरु डुदभयम् ॥ गुणैरुक्तं कृपात्तं मंज
 यानयनायः ॥ रुक्मश्च न निम्बः कस्य कुरु डुदभयम् ॥ च वं वृद्धा डुयः कश्चिथागी लार
 विडं वृकः ॥ नथुलस्यमथुलादष्टदभयम् कुरु मं समस्तोवाधिरिर्गक्षविष्टामरुमलीक
 कः न नवीनीयनीयायीयदिवृद्धेनयिप्रक्रितः ॥ यदिकर्म क्रयाइः खं डुष्टावलमवत्स

कलश

नं मान्वायायकृत्तम कुरुवज्रहृदयम् ॥ नस्माच्चमधुर्लवावर्हयन्मरुवि
द्वनी पवित्रमरुवभिष्मान्पूर्वमवयवाजिमान् नमोहिदमथरुर्लुचिषूलाश्चवृद्धल्लह
अथरुर्लुचिषूलाश्चवृद्धल्लह मरुवयायाकारवर्हस्ययदिवहसमाधिहिय
द्वनीमाथवागिभ्यः ४ मरुवज्रहृदयसमायव हियममरुवज्रहृदयसमायव ४ न
थमरुवज्रहृदयसमायव हियममरुवज्रहृदयसमायव ४ न

[illegible]

द्वात्रिंशत्पञ्चकं स्य धनं द्वात्रिंशत्पञ्चकं निर्यहं नद्वेन कथा लकं यज्ञं वायि न थावदी सानाद्वरा
 त्रयष्टिकां मूलसुखं वदिसु स्याथ्यर्धने वत्र आशुर्वं वत्रावली तु न नेव जूरुसु फाथक लयध
 न् ॥ द्वात्रिंशत्पञ्चकं स्य धनं द्वात्रिंशत्पञ्चकं निर्यहं नद्वेन कथा लकं यज्ञं वायि न थावदी सानाद्वरा
 वत्रादिरियकं वधुनायधमधुल कस्य यूवोदिक विधयममक्षो समातिवन् नवममध्वम
 कस्य मध्व खड्गं मनी लकी वज्रधौ किमकं च वज्रक रिक यायकं ॥ यूवो वज्री किमं खड्गं स्वगवः

धुसमातिवन् ॥ दकि धायीक वल्लु यने न वन मसी लिखन् ॥ पश्चिम न क वल्लु उ न क यम
 न विद्मार्क ॥ उरु न खड्ग मा न उ म्भाम व धुसमातिवन् ॥ वज्र विद्मार्क क रिक मग्नि का
 लसिनी लिखन् ॥ नेम ययीक वल्लु ड लिख ड लसु विद्मार्क ॥ वायु वज्र न था वका वज्र य
 वसु विद्मार्क ॥ जेमान म्भाम व धु नु नी ला त्य न स मन्त्रिनी ॥ वं ड सु र्या य विरु ड मर्च
 विद्मार्क स्य धनं ॥ नका मधुल विदं डार्क मया ला कार्थ सा धन ॥ अथ वाम धु ल कथा

सठपथनसुलिखितं ॥ पूर्ववत्सुलं लिख्य मध्यमं सुलं लिख्य नृ ॥ संयुद्धं वव वावेयुर्व
अनावतं लिख्य नृ ॥ गथायीमात्रं लेख्य पृष्ठनकाचयं लिख्य नृ ॥ संलिख्य इह नमो मावत्र
वक्रो माहवकी ॥ अनानेम गयीर्गा यिभुनवकी समा लिख्य नृ ॥ वायुश्च लाहिनादनी नार
वकीं समा लिख्य नृ ॥ नेमान यीर्ष्या वकीं भामा लिख्य यठलेम सुलं ॥ अथ मंडलादि
नमस्तु वक्रि ॥ अं यावत्सुमहाभाषमसर्वयनिवातसु हि न जागृ २३ ४६ वं ४८ अथ मंड

ल अघिष्ठानं कृत् २६ ४८ साहा ॥ अत्र नाक्य वक्राव गोक्ष मपूजय न ॥ अथ पूजार्मं उरुवक्रि
॥ ॥ अं कृष्ण वलपूष्यं पनी कृद् ४८ ॥ अं अनावत्रपूष्यं पनी कृद् ४८ ॥ अं यीमात्रलपू
ष्यं पनी कृद् ४८ ॥ अं नकात्रलपूष्यं पनी कृद् ४८ ॥ अं भामात्रलपूष्यं पनी कृद् ४८
दयवकी पूष्यं पनी कृद् ४८ ॥ अं माहवकी पूष्यं पनी कृद् ४८ ॥ अं यिभुनवकी पूष्यं पनी कृ
द् ४८ ॥ अं नागवकी ये पूष्यं पनी कृद् ४८ ॥ अं ४४ यीवकी पूष्यं पनी कृद् ४८ ॥ पूष्यं दीय

वच कुरुदंथायधर्माथा नमस्त्वंध्यामिष्यामिनद्विथयवस्वकं वप्रवर्यवप्रिष्यामिवर्कः
 यिथमुषावचपमदायकनमश्चनयामिकदावन । नृगगीकविहृषाकेवर्कयिष्यामिमात्सः
 वान् उच्चैर्गर्भामिहभर्माविकायेययिचरुजनं एवधाषधमस्यागमदकामनसिऊया विभु
 धंधावयिष्यामियथावृद्धनदगिरु ॥ कनडित्वाभ ० मानेपाय्यवृद्धत्वमुरुमं । रुवयंरुवविना
 नांभयलंसर्वदहितां । संसात्रामिरुवयावरुवत्सगमिय ४ यमान् । रुवयंसाधूससंकिधामां

लाकहिकन ४ ॥ कजायमदकारिधक ४ ॥ गिष्यं उच्चरुटिकसंकासंनिर्मलं ध्यात्वाविऊयकल
 भाइकेदेमाकृष्यसहकात्रयत्नवचनउञ्जाः सर्वकथागकारिधकसमप्रियहं ४ ॥ ननाहिधि
 ॥ कजायमकृटाहिधकः वस्त्रादिघटिकंसकटं सर्वत्रत्तमिवाकल्यमिष्यवक
 वरुिनमिवध्यात्वाकहिनमिमकृटंदत्वापूर्ववदहिधिवध ॥ उच्चमदाभाषलआविम
 २ ॥ स्याददधहंरुट ॥ कजायखज्ञाहिधक ४ ॥ लाहादिमयखं नस्यदकि धरुस्यदत्वापूर्वः

वदहिषिक्केन ॥ अं ह न २ मा व य २ सर्व भ क न ह न ख ज ग न हं ह ॥ न का यं पा भ रि ध क
 ४ ॥ ना सा दि म यं पा भं न ह न क नि यू ट वा म ह ह द त्वा पूर्व व द हि ४ वि व नू ॥ अं गृ द्वा २ क ह
 २ सर्व इ य नू पा भ न वं ध २ म ह स नू ध म न स्वा हा ॥ न का यं ना मा रि ध क ४ ॥ मि यं यी न
 ६
 ६ म ह ना य नै म द्वा य व भ न द्या का व ध माले व ॥ अं ह श्री ग व नू क म्वा व ल सि धि ह ४
 हं ह ॥ न क ४ पूर्व व द हि षिक्केन ॥ ए नं भा ध क स्य क म्वा दि व ह ह द न य क्श व ल ना म्ना

हि ध का द य ४ ॥ ॥ न यि के रि ध क ॥ ॥ म्मी धा नु म क टा रि ध कं नू क त्वा सिं धू ना
 रि ध कं द त्वा न ना य ठ म ह द वी नू यं मि य मा ले व ॥ अं ह ग व नी आ वि भ अ म्वा ह द यं हं ह ॥ ना
 द दि कं रि का न ह्यां द कि ध ह ह द द्या नू ॥ अं व ज क या व सर्व भ क्मं व कं धा व य २ हं ह ॥
 न का रू ग व नी म द्वा य व भ द्या का व ध माले व ॥ अं ह श्री क य व जी सि द्वा ली हं ह ॥ ए वं जी
 य ४ क म्वा दि ह द न य व था गि ना नां ना म्ना रि धि व नू ॥ आ सा नु प ह्ना रि ध क म्वा न उ या य रि ध

काश्यं नि॥ ॥ अथ गुह्यारिषका रवमिभिषा गुर्वन्कादिहिः संपूज्य नमस्त्वमना
वाङ्मोमान् यजो वनमणिमांतिर्या नय न॥ ॥ यंतिर्या किमाहु यं सर्वका मसुखपदा । मयाः
कामसुखार्थकगृह्णताथं कया कृत्वा । न ता गुर्वन्त मसुख्यभिषा वहिन्ति गच्छन् ॥ ७ वदु मदाः
प्रायश्चिदं हृदयं । किमिदं नु कथं सिद्धं । गुर्वन् यनर्मर्घमांसाहिनात्मानं पूजयित्वा यद्वाचसं
नर्यं संपूजितुं न इह ह्यं शुद्धाभा विर्गपुर्णं पूजाया वस्त्राभ्यभिष्यमाहूय नस्य डिक्वाया मनामि

की गुह्यारिषा यद्वगृहि त्वाहं हृदयं । का सीति खनू ॥ न ता ॥ १ ॥ सुखमिति या ॥ यच्च न न वदन्
॥ ॥ अथ हं न वदन् नमस्तदा यमिथ ना किमात्राश न यत्नान् नान्वा रगाव का ॥ यमिथि न
निर्वाणपाका ॥ किं नु न त्वय दमद हं मंजं लपू न का वद कव्य ॥ ॥ अथ वदसि मदा
मिति दानस्य मिथ्यस्य हृदयं वद न मयि यित्वं दय ॥ न ॥ ॥ अकिनी ह्वा अयं वद न ॥ ३ ॥ ना म
न कव वि न ॥ १ ॥ हृदयं त्वमयं यमु न स्य क्व द न न ना य न ॥ ४ ॥ न क्व वि स ह्वा अ म द न ॥ ५ ॥

मानवा ४॥ सर्वांगद्वन्द्वकाराणि भिन्नं द्वन्द्वं न तत्त्वतः ॥ हविष्यं किं न वाच्यं वं समयं यदि हस्त
नि। न न ४ भिन्नं द्वन्द्वं कथं भवति न ॥ ॥ न न ॥ १ धयटं वं धयित्वा मधुसूयं मानय
न ॥ न न ॥ १ धयनमूकत्वा मधुसूयं दर्भं धनं। यस्यायं द्विहं न न धयनं। न न स्ता भवपल्ली १०
भिष्यस्य समर्थं धनं। ००० यं न धनं धीनम्यो स व्यावृक्षे पकासिना। अत्रि कामनियामूठ ४
सिद्धि न स्य न धारुमा। न न गुण ३ क ह्यु कथय वृत्तु नानध विहागं न न वरि निर्गच्छे गुनः

४ पलातु न गती रूथालूट क न डु यं न र्क न्या दर्भं यं नि। किं त्वमत्सु हवत्स मदीया ३ विरुः
कृष्णं भूतव व कं वरु गस्या न ४ पवृषणं ॥ ॥ साधक न व कथं किं न न ता स ह मानः
त्व ४ वि ४ दिया ३ विरु कृष्णं। कार्या रू किं मया स्त्री नां यावदा वा धिम ४ ३ ॥ ॥ सा
वारु ॥ ॥ अक्षमदीया त्यर्ग सर्व सख समन्विनं ॥ भवधया विधा भन न स्य ह सिद्धि
दायिनी। क नू य प्रय धा कार्या धैर्यं पुथा ग न ४ स्वयं व ३ म हा वा व ४ स्ति ना कृ न म हाः

कथनी

सुखं । ननु ४ साधकनात्मानं बहु भाषणात्कान्तध्यात्वापह्लाके द्वयवकीर्त्येन सीयूटं कृत्वा
 चतुर्भाषणं कृत्वा ५ । ननु निष्पन्नगुणप्रमुखं कृत्वा मयमासादिरिगर्तव्यं कर्तव्यं नू॥
 ६॥ निष्पन्नगुणप्रमुखं कृत्वा ६॥ निष्पन्नगुणप्रमुखं कृत्वा ६॥ निष्पन्नगुणप्रमुखं कृत्वा ६॥
 ७॥ निष्पन्नगुणप्रमुखं कृत्वा ७॥ निष्पन्नगुणप्रमुखं कृत्वा ७॥ निष्पन्नगुणप्रमुखं कृत्वा ७॥
 ८॥ निष्पन्नगुणप्रमुखं कृत्वा ८॥ निष्पन्नगुणप्रमुखं कृत्वा ८॥ निष्पन्नगुणप्रमुखं कृत्वा ८॥
 ९॥ निष्पन्नगुणप्रमुखं कृत्वा ९॥ निष्पन्नगुणप्रमुखं कृत्वा ९॥ निष्पन्नगुणप्रमुखं कृत्वा ९॥
 १०॥ निष्पन्नगुणप्रमुखं कृत्वा १०॥ निष्पन्नगुणप्रमुखं कृत्वा १०॥ निष्पन्नगुणप्रमुखं कृत्वा १०॥

आसनैकत्ययरुजयथा लघुसमाहितं ४। पथमं हावयत्मेर्जीद्वितीयं कनूधाम्बिकावयत्
रुमिथहावयन्मदिनामयकां सर्वशयन ४। तन्नादहावयद्वाङ्मयप्रवदप्रविक्षिर्न। नस्मि
हि ४ पूवनाध्यात्वा निष्पन्नं वलुनायदी। पूजायत्तनसो न के पृथ्व्यध्यादिहिवर्द्ध ४। नद एदः
ध्यायं सर्वपृथ्व्यमादधत्। जिमत्रत्तगमनैक्यार्क्यावनाधयनामपि। आत्मानां च
तन्नादत्वा पूर्थ्वयपिनामधत्। पतिध्वनं तन्नादत्वा ध्याविहं हुनामधत्। नमस्कार्यं

कलिका

क० क० द० मि० हि० सं० न० ११ यथि स्वा म नु भ न द्वि शु न्य ना ध्या न मा न य न ॥ १३ ॥
 नीलान व ज स्व रा वा त्म का ॥ १४ ॥ चि रु थ ड मि हि द्ध र्ध रू का न प य त्त क ॥ क र्ण न दा व द्य त्वा न
 मि वा पि न क ल्प थ न ॥ स र्व मा का भ र्त्त का र्ग ड त मा ण वि हा वा च शु द्ध स्फु टि क व त्स्व र्ग मा त्म द
 र्द वि हा व थ न ॥ १५ ॥ अ ग्ग भा रा व थ त्वा नू य लं च लं च ड द्ध थ ॥ नि ष्य न्ते रा व थ रू यो न वा
 न व द्धि ज ला धि की र्त्त का न च न मा ध्या त्वा कू टा गा न प क ल्प थ न ॥ च ड व र्त्त व ड द्वा न म द्ध :

٩٢

[illegible]

ल्यथक। नभाहिमामकीगृध्रमाकनीसैयकाभयन॥ नयावालिगिर्नः॥ अथद्वषवजीस्वनय
 क४॥ रवेजायस्कनं संवावाभयाभसमन्विनं। नऊन्या नऊनयनकेदक्षारुंडनिपीउनः
 संप्रसादपदसंवावडुर्मात्रविमर्दनं। वाभरुमिहजानकेककनाऊरयानकी। वसूधाः
 नऊनयनकेवाभजान्वयनः॥ अऊरुममोलंडनीलंनत्ताकनीटिनीयकेवीयः
 कमानकेसर्वीलकात्ररुषिर्नदिनरुवर्षाकालकेनकचरुद्वयवीहं। हावयस्त्रिपः

विरुनसिद्धादंयधुवाघध४॥ ॥ नभासखानथागनयूर्वश्चमावर्लुऊन॥ भाद
 वजीस्वनयनकाधुसमयन॥ यीनावर्लुऊनसंवायिथनवजीवनमयणीनी।
 नकावर्लुऊनसंवायनकावनागवजीकी। वायव्यवाहनश्चमावर्लुश्चामासीमान
 कानक। गृध्रावजीस्वनयनकाधुसमयन॥ भादव्यक्तिनकावय४स्वकं। अदि
 नगीति४॥ यदमेजीडुविवर्जीअरुहिमधुतुसहावगाविशान्हिनसर्वहिमायन॥

कल
या

४॥ ॥ भाद्रपद ॥ ॥ माकनूभाविअरुद्रहियहंसादिउत्तमाभाऊदह
मूडःखिअरुद्रहंजीववीरुत्तयित्तनवका ॥ ॥ किमुद्रहिसविशदिअत्त
नहिकयसिपवगे४॥ माङ्गनिमकुभअपिन्नमभअरुद्रलाआमेध४॥ ॥ नागवः
आ॥ ॥ थावनमन्किउधालिमनिहलत्तत्तउकित्तसहावविणरुद्रकहिउ
भउसमधिनि॥ ॥ रूपावका ॥ ॥ स्वप्नवद्रुद्रत्तादवाटिनिस्मृति

१४

न पूर्वकनेव न्यध ॥ ध्यायारु संयुक्तार्क ॥ न न ४ स्वभाव लं हत्वा भाव व जीत्यका सध न ॥
न्यध स्वभाव लं हत्वा पून ४ यो नावलं हत्वा न ॥ कामथ सि उन व जी उ हत्वा यो नावलं हत्वा
कं ॥ हत्वा प्रकावलं न हत्वा कामथ दाग व डिको ॥ हत्वा वलात्मकं हत्वा ह्यामा व न्यध न ॥ ४
ध्या व जी न न ४ काम्या हत्वा आमा वलात्मकं ॥ अना ग द्दवी स न सर्वमा धुली ॥ संयुट व क
मात्मानं तावथ नि र्नेय कि ॥ न ह न न ४ वर्या सिद्धि ह न व भी सय ॥ ४ ॥ हत्वा व ह्नु हि या या

गीसकृष्णवल्लवक॥ अथ गोत्रादिशाखायागीसखमावल्लवक॥ योनवर्द्धादिः
 यायागीसयीमावल्लवक॥ वका गोत्रियायासवकावल्लवक॥ आमवर्द्धादिः
 यागीस॥ मावल्लवक॥ कृष्णवर्द्धादुयानात्रीक्षवर्द्धाविहावधन॥ त्वमागोत्रा
 यानात्रीभावर्द्धाविहावधन॥ योनवर्द्धादुयानात्रीपुत्रवर्द्धाविहावधन॥ वकात्रीभा
 यानात्रीभावर्द्धाविहावधन॥ आमवर्द्धादुयानात्री॥ योवर्द्धाविहावधन॥ वजयागीः

नव॥ सर्वनात्रीदुवर्द्धागिनी॥ कृष्णदिमानक्षध्वनभक्तोमकावयि। योनकुर्तुः
 नयक्षेव॥ कृष्णदुल्लेहिना॥ आमउच्चाटनव्यानायकाकिपुर्द्धन॥ कृष्ण॥ जाम्ब
 ॥ श्रीकाविष॥ योन॥ अलकामरु॥ वकाकुनरु॥ आमसुगोनजक॥ यि। कृष्णकः
 ल्याविभालात्रीकामधन॥ कृष्णवल्लवक॥ सीनकन्यासिनामाउयीनकन्यासयीनक॥
 नकादिनककन्यादु॥ आमकन्यादु॥ आमक॥ याकामधवागृयकृष्णवमापन॥ का

क
न
वी

मथरि त्रिविधं नयथा कायिनवद्वान् । एनाससिद्धिना कं न्यायक माउं यथागन ४ । आसी
अकलरुवगुवर्जसिद्धया सर्वमाहितिह ॥ यावद्विह निमत्तं नासीमर्थरुवत्सर्व
उउयभेवाप्येवद्विष्टयावदिहं परदायनानकर्त्तव्या घृष्टायापिसिद्धिर्नास्त्यथा
रुवन् ॥ निजादानमिदं अहं सर्ववृक्षे ४ परकिर्त्तनं ॥ ॥ ॐ नमो कनवीनाय प्रदमः
राममधनकदवनाय हलत्रुथयनि कद ४ ॥ ॥ अथाकर्मयवका मिसर्वमंजः

१५

समव्ययं ॥ अथरुगवानसर्वमात्रयना ऊयन्नाम समाधिं समापयक मानुसमव्ययमाह
॥ ॥ ॐ वउमहा वापमहं रुट् ॥ मूलमनु ॥ ॐ अत्रलह स्वाहा ॥ द्विगियमूलमनुः
॥ ॐ हं रुट् ॥ रुगियमूलमनु ४ ॥ ह हृदयमनु ॥ हः हृदयमनु द्विगीय ४ ॥ हः रुगिय ४ ॥
आयमगाह ॥ एगीवरुल २ हं वं हं रुट् ॥ ॐ अविनिविनमा रुगवकिहं हं स्वाहा ॥ ॐ
क्रां क्रो क्रोश्च ७ नृथवट २ यवन् २ कद २ यस्मान् २ रुन २ यस् २ वं ४ २ ऊं रुय २ रुं रु

य २ भादय २ सर्वभूषणं बंधनैकन २ सर्वजकिनिनांगदरुगधमयिमात्रव्याधिज
काष्ठीजाभय २ कौमन २ मैनय २ नूनव २ नूनव २ दवदरुं वधुमहाभनसर्वमास्तु य
यनिअवधुमहाभाषनैरुद ॥ मालामकु ॥ नमः ४ सर्वासां यत्रियूनकस्य सर्वकथागक
स ४ सर्वथावलकाननाकद २ भाद २ कट २ किष्ट २ आविग २ आ ४ मसामरुंवालकनू
२ मिमि २ खादविज्ञानमात्र २ इष्टानरुद २ दवदरुं कन २ कवि २ मसाविश्ववज

रुहं २ शिवलिकनीगा नरुंकरं २ अचलवटसूटयहं २ असमनिकजाटमहावलसा
नयमानयजां मांसां शुद्धनलाक ४ उष्युवजी नमस्त्वैषकिरुव लखाकातयजाट
सहनमः स्वाहा ॥ द्विमिया मालामकु ॥ नमः ४ सर्वासां यत्रियूनकस्य ४ सर्वकथागक
सर्वथाजाटअभाघवधुमहाभाषनैरुद २ भाद २ कट २ किष्ट २ आविग २ आ ४ मसामरुंवालकनू
॥ ॥ नूनिपंकेचलासा सामान्यमकु भविदिगपमकु सु ॥ उं हं हं वलहं रुद ॥ उं :

क
श
दी

स्वमात्रलहंरुद्र॥ उं श्रीमात्रलहंरुद्र॥ उं नकात्रलहंरुद्र॥ उं श्रीमात्रलहंरुद्र॥ दवीनाः
नमामात्ममनु॥ उं वज्रयागिनीहंरुद्र॥ मूलमनु॥ उं पद्मात्रमिहंरुद्र॥ द्विगिथ
मूलमनु॥ उं वाहनिहंरुद्र॥ रुक्मियमूलमनु॥ उं पित्रश्चक्षुवक्षनिहंरुद्र॥ मध्यावर्द्ध
निधिनिश्चर्द्धिबर्द्धनिस्त्राहा॥ ॥ मालामनु॥ ॥ विमेषमनु॥ उं द्यव
जीहंरुद्र॥ उं माहवजीहंरुद्र॥ उं पित्रवजीहंरुद्र॥ उं नागवजीहंरुद्र॥ उं नूयवः

१८

जीहंरुद्र ॥ मनिमनु ॥ ॥ सामान्य ॥ उं नमो रूगवने श्रीवधुमदाभाषधायद
 वासुनमान्थजानकनायसकनमानवलविनासनकनायनत्तमकूठकनमिनस
 ॐ देवलिगुद्र २ ममसत्वविष्णुंदन २ वडुमानिनिवायय २ जाम २ जाम २ छिन्द २
 हिंद २ नाभ २ नाय २ वाय २ छंद २ स्रद २ इष्ट सत्त्वान्ममविनूदकविरुकाहस्मिन् २
 हं २ रुद्र २ स्वाहा ॥ ॥ ॐ नमो रूगवने श्रीवधुमदाभाषधायन नयेमनुयठल

४ पं के म ॥ ॥ अथ रगवनीष ह्याघात्रमिना रगवर्तगाठमालिग्य यमनव
जयमर्षमंरुतायाह ॥ निष्पन्नकमया रगवनाकीदभीरव न ॥ यागिनीनावेहिः
मार्थययुद्धिर्नसहृतीकन ॥ ॥ अथ रगवनाह ॥ निष्पन्नकमया रगवनागी
यागेककत्यन ॥ रावयदकविरुनममनय सहर्निर्भी ॥ कल्पयस्वस्त्रियनीवस्त्रिय
सापिनिर्नर् ॥ गाठनेवाकियागानयथेवस्त्रुटनीवज्जनामानवईहिर्नर्न्याथरगिनी

हागनयिका ॥ अन्त्यावरिनीसर्वाजीविनीवाअनीकथा ॥ वाअलीनटकी केववजः
कीनयडीविकी खनिनीयागिनीवेवकथाकायातिनीयन ॥ अन्त्यावमियथापाफास्त्री
नयमसंस्त्रिणी ॥ सव्यत्सविधाननयथा रुदानजायन ॥ रुदुयुयिर्नयधुनायधुहः
स्त्रिमाधर्न ॥ अवीवीयाकथरुकेखज्जयाभनकीययन ॥ नहलाकहवीस्त्रिद्विधयनः
लाकयिर्नथेवव ॥ गत्यावगुप्तमहर्नकरुवीर्दिनेगावेर्न ॥ जाकिनीमनुवगीयवधु

भाषणसाधनं। अन्यककामिनामर्थमथावृद्धनराधिर्न॥ मनानवकलकदं सर्वोय
 उववर्जिन॥ पञ्चनगीसमादायस्ववगात्रम्यकामिनी॥ वृद्धाहंवास्व॥ सिद्धि॥ यद्वायान
 मिनाप्रिया॥ रावयस्वस्वन्यधगाटनवनसाम्धा॥ निर्जनवाथंरुत्वायथास्वानवस्तुः
 क॥ रावयतिरुत्वायांनभ्यान्यद्वयागम॥ श्रियंययकन॥ रुत्वास्मृतिवायवश्च
 हि॥ द्वालीमभान्यगनगाठमभ्यान्यमीक्षयन्॥ नगादृष्टिस्त्वंध्यायं निरुदकायमा

नस॥ कयाकववकव्यस्त्वागड॥ कनवव॥ त्वंमपूषासिंहर्त्तसिर्त्तमकानाप्रिनामः
 रु॥ नवाहंजननीरायसिगिन्नरागनयिका॥ सफरि॥ पूनधनसिर्त्तपूजय॥ नवाहंजन
 नी॥ वायूवायस्यममसानासावमनरुनी॥ वडस्यायधमवृद्धनकवंधकसीनिरं॥ वरुकि
 मिनिनीध्यायंरुद्वास्वकननसा॥ रावयरुर्जकीशोखानिचलारविरुन॥ नयेपुनरुनी
 दयादिलेवस्वपियकधी॥ यावमूर्च्छादरुगीनयंअमार्जविचिकय॥ ॥ स्त्रीमकीज

नीनखलुस्त्रिगुणांस्सोखादाजिं शिवाविशेषादिदनि ययनिसुखलाययायकर्मव्यवः
स्त्रिगुणींशंनभेवइजावमाहननकभोदसदाइ४विना४। कदलावइवद्विदग्धवयषक्ति
ष्टनिकासक्यं। किंउवायागुह४४४। धां सर्वसुखयनिग्रह४ कयावायदिवात्रकास्त्रीध्वं
विरुपकिष्टिमा। आस्तांतावस्वजनयननमपिपूकतिहिऊया॥ सावदर्वययान्यथा
शुवकथागिनी। आस्ताकुदगीनकस्यासुष्टिष्टिचइनक४॥ यस्यात्मनमात्र

तनकअर्धलखकसुखीपेधवविषयास्त्रीधादिव्यययनसीस्त्रिमा॥ ननुदाहिनीकः
स्वासुखकुजकिमानवा४। कस्माक्कावायनिमूकसर्वगकुहममिहिक। यूल्यपूधामः
हायूल्यपगादकून्मश्चिक। ककस्मागठनादकास्त्रीष्टदरुनपीउयन॥ कूर्वन्था
कानकयागीनीनक्यादिननिनी। कूर्यासुखादयवध्वं ध्वं चदातवातेन। वधः
आनूयद्वववध्वंवाप्यन्मर्दन। यादवात्रध्वं ध्वं वध्वं ध्वं कूरुमिवायिकवध। सम

क
स
वी

दकककेवध्ववध्वचक्रिससंल्लकं ॥ ममगीजालवध्वचयजानुधयादनं ॥ कथेवक
मवध्ववसर्वगारुदभवच ॥ कथयर्थकमध्वउत्क्रियंनककठकासनं । कलावाहूयूगं
स्वधस्वस्यगाठनयाजयन ॥ ॥ स्वस्यवाहूयूगं कस्याऽककमध्यादिनिर्गनीय २२
अप्रक्रियवउत्क्रियाभावध्वसूखादयः ॥ दधार्हस्वयूगं वध्वमन्यान्वयागकऽऽ
षचवालथवाहूयूगं भायं कालवालनः ॥ कस्याजानुध्वयं स्वस्यहृदि स्वाहुवसंयुटं गदासा

बालकवर्णनासाद्वर्धयं जानूकं यद् ॥ कस्याऽयादकलोस्वस्य वा नमूलनिधाजयन ॥ सुखाद-
 यकवर्णनासाद्वर्धयं वा नमर्दन ॥ कस्याऽयादकलोनालोहदियाग्नेयवायिदि ॥ दलावालन
 कवर्णनासाद्वर्धयं यादवालन ॥ कस्याऽयद्वयं रुमीसंस्वायकाटकाटल ॥ सुखादय
 कवर्णनासाद्वर्धयं रुमीवायिन ॥ नामककडकनसंस्वायदियादकेयभावनयन ॥
 वधः समदन्तकाहयपथककेयिशावनयन ॥ ॥ कस्यायादयंगंवकुल्लावा

मपथाजयक। सर्वथायिसंमुखं वायिद्वदायुष्टस्य अरुन ४। हस्कादिमर्दने कर्षा द्वे धायं विः
उमैरु ४ यन ४ मुखदयं कृत्वा मा मूलाननयायकम् ॥ सखनचकगने व वज्रं यप्रनिबध
यक ॥ कस्याजान कलग्ग ककस्य द्वे निथाजयक ॥ अन्त्यात्तवनिहिस्तुचकु मनीजालमिनि २२
सुन ॥ कस्याः यादयुगंदत्वास्वस्व धायनिनिरुन ॥ ॥ यजानुटा धयवध ४ वभा
वभायथागकः ॥ कस्मा ४ वामयदस्व धसवावा भावमवक ४। कस्याः सव पदस्व धवाः

मसथात्रमूलक ४ ॥ उर्ध्वयादाक्षयं वंधः सस्त्रवाइः खनाभनः ॥ कस्यायादकलवजामः
धसमनयाजयक ॥ वाहृत्पीयो उथजानूकस्य वंध उदांगक ४ ॥ कस्यायादकलनजक रूः
मोर्ध्वनिथाजयक ॥ वंधयं सर्वना रुद ४ सर्वकामसुखायद ४ ॥ त्रिजयर्णक कया वडकः
यात्सर्वी विप्रिजको ॥ काटनयिउथागा टव ४ नाघनयागन ४ ॥ वंधयच्च मुखं नस्यायावदी
कं यन ४ पून ४ ॥ ॥ उन्नाम्य वदनं दृष्ट्वा यथ कं वाचकं वदेत् ॥ ॥ डिक्का केचूषथ रुस्याः

यिवहालासखाद्वं । हृदयञ्चरिन्दनमलसोर्वाविहावयन । यीउयदरुजिह्वायदामैध
नायिधानिके ॥ जिह्वायानासिकाग्रं ध्याययन्तजकाटिका । दन्तकक्षेत्रनङ्गा नमनसर्वचरु
कथन ॥ मरुत्तुनङ्गलंक र्ह्याख्यकक्षेत्रनङ्गा । चूचयित्वा नखदद्यान्मस्यकल्मानज २४
द्वयं लिप्ताः ॥ मर्दयत्पाणिना नूपुरं च रम्यं यदं गय रुत ॥ स्वयं समुत्पन्निकोक्तत्वा चूचयत्
दनादनी ॥ अथवाहं स्तिनपूर्वस्मत्वास्मत्वा मर्दं मर्द ॥ हस्तनस्य गीयत्पद्मं वासुदनामिदं

[illegible]

गीसमाहिन ४॥ ॐ ह्यध्यायकं नन्दया त्वास्मान्नसः। यथैष्यद्वन्नावाक्यत्वाः
 कमानसः। कापिनया लिखत्यप्रजानयादयथागमः॥ रुकथयप्रगंशुर्ज्ञातिर्वापि
 जिहया। नासयानलिकायागः॥ लिखत्सामर्थ्यद्वयः॥ प्रकाल्यजिहयायप्रपञ्चाम् २५
 क्वायवन्वयन्। काजीकृत्यनन४यत्थरुकथसत्समासर्कपिचइग्धवसंवाचन४
 कामप्रवृद्धयः। अमंजीर्यनित्यत्वादिह्याहुस्त्वादिभिः। पूनः पूर्वकमनेवद्वन्द्वम

न्यायमात्रवथन्। अन्ननास्यासथागनसाधिवन्वमहासूत्रे। बहुभाषयदधरुजानन्य
 उवथाजयन्। वागिनांसिद्धिदानावागयकाभिर्न४स्यजंघायनिष्ठायावामजं
 घातुलीलया। रम्यान्पाकार्यसत्त्वपर्यक४सर्वकामसूत्रपद४। यप्रपर्यकमात्रध्ववा
 मजंघाद्वमपर्ययन्॥ लीलयास्यजंघातुयजयपर्यककः। सूनः॥ हसोयादनलोक्ताय
 सभर्तृमखदीर्घक॥ अर्द्धवडासर्नरुयमननूकाससूत्रपद॥ निर्यगुजानयूर्गहसो

गुल्ममध्य उयलक । हत्वा धन्वा सन वेवा दिव्य काम सख यदी । सत्वेय मीन धा यथा किमिदं
 लिपि । उत्कृष्टं वादं च दधत्वा सन मिदं मनी । अर्द्धं च दास मासीनां सि यत्न स्वा निरीकरी ।
 पाणि त्वासी लिखत्य मीग र्द्धं लक्ष्मि कर्ष । यत्न हत्वा सन क स्वा नान र्द्धा कदा कदा पातः
 यित्वा गुर्तन स्याः सा लिखन्ता स्या यित्वा । कइत्यन्तं सर्वं ध्यायाच्च पुत्राय ध्यायागनः । कदा मूका
 वधागी सर्वं सैक ल्यवर्जिनः । विनाग परिहर्ति विरुद्ध स्वा माया यका सयत् । अनूनाग प्राप्य

२६

कपूष्प विनाग दद्य मायका । न विनाग त्वयं यार्थ न यद्धी सख क ४ यत्न । क ४ च काम ऊ लो ग्यो वि
 रुक्म्यात्स मादिन ॥ ॥ अथ रुगव निष मूखेदिन रुयौदे रुगवर्तेन रुग्णा रि व धेव मा
 रु ॥ ॥ रुगवर्तेन नृधाम व कवल भव साधना याथा ३ न्ययाम मिवा ॥ ॥ रुगवाना
 रु ॥ अज्ञान नृकाय सत्त्वा ४ सर्वदिश्य वस्तिता ४ दवा सवन ना नागा रु पिमि धानि साधका ४
 ॥ ॥ अथेव रुत्वा मरुत्वा दया वो दवा गो ली ली श्री भवी न न्यादि द व नी गृह्णित्वा राव

[illegible]

यस्य कंठनिष्ठं त्रयागयटलं षष्ठमं ॥ अथ रुगवानाह ॥ मेधूनं कूर्चं नाजका
महानस्यायनिष्ठमः । नस्य विष्ठमनाथः स्वर्ध्वकमर्हसि ॥ रुगवानाह ॥ केनां सोर्वा
समालं व्यस्त्यथ कनिष्ठाधिनी कुंजी नमस्य मासं डपिथ नमस्य समाहिन ॥ अथ रुदं
यथा लय रुदं कदिशी न नीलकं । स्त्रीभाषथमना दयारु इच्छिष्टं उरु रुदथ न । नस्या उ
च्छिष्टय उरु रुदं कवीनियननं । नस्या च वमनं नीलं यम्यक्षालनं पिवत् ॥ गुडवत्

कालनेष्टसखादिकालयदुर्गी। वानं डुरुद्रयसुखाह अयच्च वडु ४ समं पि वच्चथानि
 ऊवाचिरुद्रयस्वटयिउकी। यथासंकायमासाद्यावडा। कानि रूलाधिकी ४। नयेवा
 अविशालानमानवः सुखसुखलं। नऊ गमायिनागश्चनमरु सुसुदहिनी। सवयद
 अविशालानमानवः सुखसुखलं। नऊ गमायिनागश्चनमरु सुसुदहिनी। सवयद
 अविशालानमानवः सुखसुखलं। नऊ गमायिनागश्चनमरु सुसुदहिनी। सवयद
 अविशालानमानवः सुखसुखलं। नऊ गमायिनागश्चनमरु सुसुदहिनी। सवयद

२८

सरुजानदेकमूर्ति उक्तिवें थागिसमाहिरु ४। सर्वथागय काथागीयदिस्या लावनायव ॥ वडुलाये
 कथा। गाननदाहं कानधनक ४यदिव मसुनं दन्यादयि याधेनसि यन ॥ कस्मादेवविधनाथरावय
 वडुनायनो ॥ यनेवननकं याकिजन्नवानो दुकर्मता ॥ सोयानयडुनेवना कयाकिनगंसय ॥ पूर्वग
 मीसर्वयायपूथमिदं सरु ॥ मनसः कल्यानाकारंगमिस्मानादीरुदिकं ॥ विधनामदिकं यच्चरु
 कलादाय ४ कय ४ ॥ नयवमदिकं कलासुखमायुचवर्द्धन ॥ अथ कस्मिन्नक (यदविपला

एवमिमांशना ॥ कर्त्तुं ययं न कनया शत्रुभाय न मदाया ॥ वज्रवलि मस्तु कदाचन द
 विदुः मूलं मम दिये नृपकं ॥ त्वा कदा दकान मूलं ॥ यदि वस्तु गतं हान्या त्वया पाया
 यन्न लिखनं ॥ मदि यनृप माधव मस्तु का ॥ वै कथं न सा ॥ मानय नृप मस्तु यदीव यागि
 नी वलि यनृ ॥ मी दया व कला कदा मानता ॥ थं विरुका ॥ रुं य सर्वारी या थन न सा मर्थे
 पका गिने ॥ ॥ ॥ ॥ कला वीजा यथी वलु मस्तु या वन नृप द ॥ ह यी नं ननय

२९

नायन मूलं दृष्टी ननय दल ४ मय मः ॥ ॥ अथ रगवान रगवती यं व मधुले न
 मस्तु न्या द ॥ त्वदीयं यागिना नृपकं ॥ थं कथं पिथा रगवती नृप गीना वि ता कन या गीनि
 रवि यति ॥ ॥ अथ रगवति मस्तु ॥ या वद्विदृ गतं ला क्क गी नृप र वन नृप ॥ नम विदु म नृप
 नी वानी व कन गतं ॥ द विवा मत्री व व य कनी ना द सि रथा ॥ नागिनी रु नि नी क न्या कि न्वी मानृयी
 रथा ग न्वी ना व कि न्वी व ती र्यं क क न्या थं थु नि का ॥ वा क्क नि द रि दी व ग्या गु दा वा य क वि रु ना

कायसुभाजयुवीवमिष्टिनिवाल्तुहिनी॥वनिजीनिवाविनीवेग्यावाउवनीवर्मकाविनी॥कू
कीनिठामिचमुलिगवलीभीरुध॥वाधिमिसोदिनीगलुवावीनि॥नायिकिनरोनिकसकावि
नीस्वर्गुकाविनी॥कवर्कैखाककीकूककाजीभीवायीमानो॥कायात्रीभीगीखिनीधेवःववदो ३०
नीवर्कमानिनि॥सायालिककुकाविनीवकाजीवसिवाकूरो॥यथभीनीकासकाजीवसर्वज
मिसमादिना॥मानवरागीनीरुयोमामिकाकागिभयीका॥खडिकावस्वमाधेवजयावस

वेकाहिनी॥वमैकिनीथागिनीधेववकुवायीरुयधिनीएखावद्वध॥सर्वोऽमुमद्वयस
गकाऽसिगाधेवसेसत्त्वार्थस्वस्वन्थममिथिकाऽकासाभवयथात्मारुचुम्बनार्वागीनादि
स्ति॥वजयमसनाथागाङ्गागीनारुकिमविना॥सविनामुऽसुयऽसिद्धसर्वसत्त्वदि
वीदि॥ददकिन्नादमापदनस्मान्सर्ववथरुयोय॥सुयऽस्वर्गऽसुयाधर्मऽसुयऽ
वयवैरुय॥सुयावद्धऽसुयासंघऽप्ररूपावनिनाऽसुय॥यकवगुयऽदनकलीका

तिननामयसु। लवर्तु रुयानात्रीधववाजिकिकिनिगा। श्वकलोवाहयानात्रीभाहवजिदिदि
 सामका॥ यीरुवर्तु रुयानात्रीस्वधवीयिसूनवजिका॥ नकालोवाहयानात्रीवागवजियकिरी
 का॥ ग्यामवर्तु रुयानात्री॥ व्यावजिनिकथग॥ नकवरगवकियरुययकेनयनसेसिगा॥ प
 यधूयायजादिलिवसुमघवाधायन॥ रमे॥ सलाघलेनमस्कावेसीयटीजविधानवे
 ॥ दसनस्यनश्रयिसमनलेरुवव॥ कने॥ वृम्वनालिजिभेनीखीयजथवजथागिनीग

३१

कोकायनकरुव्यमसकोवाक्यवगसा॥ रजाहयूजिगा रुकासर्वेसिदिददाम्यन॥ सर्वेसुध
 हयूपडवकागनागारुवाहथका सुयजननान्यथोमदियस्याथयजनननानाधनर
 हुरुकासाधकयसिदथ॥ सर्वेसर्वदानीखीरुका दृष्टियथगका॥ मदियागयनयनध्या
 वास्वस्तिवकामयह॥ कजयप्रसमाथागा॥ नृकस्याहंवाधिकायनी॥ नस्मासर्वेयकायनममा
 नाधनरुयनी॥ ओविमयियदाक्याह॥ यदिवायापीमानन॥ वददाथमुवावाक्यरुजैयह

युगिमादिके ॥ साधिके रुद्रयज्ञाथ शोयीकं यत्र दयाकं ॥ नयाये नियमकथा गिममात्राधनतस्य
 वश ॥ मयि यमस्य कस्युथाया गिध्यानक कस्य वश न खन वन यद्युकी वसुस्य मयी मात्र रुद्र ॥ जन
 नेव यथा राहममात्राधनयुक्ति ॥ नकुर्याच्च रुद्रया यनात्र का दोष उक्तं नो ॥ रुद्रं कुर्यात् लोकस्य
 यावच्च कितवत्यन ॥ नयायं विद्युत्किंकिरुनवत्ये किंविदसि हिंलाका विरुनसथ पापयत्य
 यव सिद्धि ॥ विरुमायं यत्र ॥ सर्वं दनमायं कुरु सिद्धि ॥ नत्र कंगवुका सोवका सोस्वर्गं तुया

32

तीहोयथेवा रुद्रनाम रुद्रं स्वर्कं संलपयिष्य पुरु विद्या हावायी सजाकि रुद्रा स्वर्ग मध्या गति ॥ नव रुद्र
 यनिहाना रुद्रा वा केयं न वृद्धं ॥ निर्वाणं गृह्य नृपं तु यदीयस्य ववा रुद्र ॥ रुद्रं दत्त यवत्सायीन
 वाधियदमभूत् ॥ रुद्रास्मत्तं यनिह्यष्टमा भवानाधयदुक्ति ॥ ददा मिऊनगा पुन दवतु सिद्धि नसे
 भय ॥ अथ रुद्रगवन रुद्रगवर्णि पुरुयात्र मिताह ॥ किमाका भारु ववतु रुद्रस्य सिद्धि कि दृशी ॥ अथ रुद्र
 वयाह ॥ यक्नस्मि पुरु दनया गिन्या यायुर्हिता ॥ नासां स्वस्व रुद्रा वयं यक्न वतुं रुद्रद रुद्रा

वदुःसर्वेष्वप्यथानिन्यानुयादिकिञ्चीनवदुःसुधाहर्षोसचनीलाचलस्मृताः॥आनलोवा
होयारुर्होसआगावनसरुक्का॥यीनवर्तुहोधीरुर्होसंख्याकृ॥यीनकाचन४प्रकाशेनाहोया
रुर्होसनकाचउदाहरण॥अमवर्तुहोयारुर्होव्याग४अमकाचन४॥चकपर्वरुवच्चपुष्पक
नयनसंस्थिता॥चकचदुस्माख्यानास्यसिद्धिदृष्टकलन४॥यावदाकासययन्नदिवानयन
संस्थितावदुसिद्धियथेवाकारथचक्षुषसिद्धादि॥ २२ ॥ पुष्पकन्नवीनाख्यपीचलुमहा

प्राखवकुरुस्वनययकलऽज्जमक्ष ॥ ७ ॥ अथरुगवनिज्जाह ॥ कथंरुगवन्पुत्राययथा
 नहंकाभारवमियऽ ॥ रुगवानाह ॥ थारिस्सिमरुऽरुत्थाज्जन्थान्यवदृष्टिगयनऽशङ्काय
 समादायध्यायदकागमानसश्चावउकायस्वरुवाहदनास्सिमनागयि ॥ विनावाधय
 नरुदिऽपुत्राययथागकऽ ॥ मृच्छन्वायकधर्मऽसम्भारुत्तरुवाहवऽनिर्मादावर्जित
 यंकामरुगामस्तस्वरुवावउकायस्वरुवाययनूयन्नुगीधुतक ॥ वउकायस्वरुवावउ

नृणां दुःखिभ्यः कुरु ॥ यस्मान्नवरं वदुःखं ॥ चतुर्कायस्वरं वदुःखं ॥ पुरुषायानमिनामुच सर्वदिग्भव
 सिद्धिमाप्तासत्त्वदुःखामर्दकानं कुर्यात्सिद्धाश्च दयुनः ॥ चतुर्धा खननिजन्तयनसंस्थिताः ॥ सिद्धास्त
 कामिनिचतुर्नयमाधाय ॥ सर्वकस्यां सादवरावयदीथदीर्घकानरुक्तविरुक्तसर्वकर्मय ॥
 नीलकण्ठवानां सेवेककस्यनः ॥ गीष्मोऽख्यं कविरुनयिसिद्धिनलस्यनः ॥ सिद्धिलेद्धायवायागि
 स्वहायुक्तिदालयनः ॥ दृगं नमेवलाकेतुवायविरुविश्वलीकः सर्वरुः सर्वलाव्याविसर्वक्रम

विवर्जितशान्तालात्रजलानस्यमृच्छनविश्वरु ॥ विषमक्रमकस्यनजलनाधियावकः ॥ नगं
 मुं गुरुमेघासुः समुद्रविक्रयचनः मनःकाकिरमापनसर्वकामसमद्रवशाककृन्नराणीवा
 यत्नेश्चिरं मरिसमारुधनः ॥ लाकधातुसमस्तयुययनवसंस्थितः कस्यकुरुविमानानिस्त्रायीक
 सर्वकामिकः ॥ कस्यदीयसुधायाम्बानयथावनमयिनाः रुविष्यकिनसंदहायावः ॥ स्वर्गपानक
 ठावम्विष्णुनरुगायगकानः ॥ दयःसनाः किंकशाकि सर्वव्यापीनः यनकिष्टिकाः ॥ यत्ने

वथागीनः सिद्धिं यागीन्या मुनेषु वः हि नः वाः वज्रधनकाया धाविता वज्रयाधिकः ॥ ॥ ज्वरुग
 वति आह ॥ कथं रूपाव नंद ह्ययं ह्या पाय शांतिन सुखं मरु इत्ययं ॥ रूपाव नंद ॥ ललनाय ह
 स्वराधन वामनादियव ह्मिना ॥ वसनावायाय नूयन दक्षिण सभ ह्मिना ॥ ललनाय सनथा म्म
 अवध किय कि ह्मिना ॥ अवधूयाय दावाय रस कर्णेने मनसि कर्ण ॥ शिखर सवेष्टय किं वज्रधन मुने
 गा रुद्र ॥ यहायाथा समाथागा रुद्र कुलिना तिस ह्मिना धादीय वज्रल ग नडा वाय ग उद्र मरु

३५

मं ॥ कनाय घक सो लोख ल्य सु ल्य यथा गक ॥ क ल ह ल म ह्या या गि र्ने के व सु ल्य रा व रु ॥ क ल ह ल य न
 व ह ल्या क्नी क्ष म त्या स था ग क ॥ म्मी व रु म ल था य त्या द सि ने व ज म्म नी ॥ ॥ कु ल्य क ल वि वा ल्य
 म्मी व रु म ल था व रु क ॥ न य क लो न व म ॥ ॥ ज्वरुग व कि आह ॥ किं रूपाव रु मुो व जी ल क
 नायि ग क क सा ध यो रु ॥ व रु वा य म ॥ य द उ दा स्त न ग क क ॥ रूपाव नंद ॥ न ग क क द व ता आह ॥
 किं रूपाव सुखानू द यान्न ग क क ॥ रूपाव नंद ॥ न सुखा द य मा रु न ल ल्य क वा धि नू रु मा सुख वि ग

स्वाध्याः स्वध्यायक सावना न्यथा ॥ नृकायमिना नेवकात्रो वजायक । कात्रक मुथा था गा ननवा
न्या हो कदावन ॥ सर्व साभव मायानी । सिमा येव पुगस्यक ॥ नाभवाणि कु म धा वोन सिद्धि स्वयोग
वृत्ति ॥ नस्मान्न सुविथा गायक रुं व सु कदावन ॥ एव यदि रु व इ ३ व मृत्क वाव धन रुयी स झम ३३
सर्व भव द द्या यने व सं थ कृन् ॥ यस्या द व ली य ३ ॥ सर्वो ३ सु खे व क च था यिका ३ नी न जा थ ला रु द
निश्च काम य ना य ना ३ सिद्धि थ ना द द नि रु सर्व नावन स विना ॥ सुी ती न य नु कि वा र्य मि थ न वा यि

पुमरु ३ थ न देव विथा गान के व क व म न य ने ॥ नस्मा सर्वो ३ सुिथा द व ३ सर्वे थे व य क ल्प के थ
म स क लि ना था यिका द या वान का दि सि ३ ॥ सुी त व य मान द वा द व कि सुी न न स्य दि ॥ पु न्या न्य रु
व स्य जा व ज य म था ग न ३ ॥ ना न्य व य रु य द व स्वा धि स्तु न म यि स्व य ॥ नस्मा था गि क था वि द्य न
उ ति रु थ था ग न ३ ॥ उ य व थ सुी यं न रु पु रु या न मि ना क किः यू थ ना थ व य नि र्द्य दी य भू या वि
रे रु था ॥ य थ व रु ना कू र्यो थ क म पु ल था ग न ३ ॥ न रु ३ पु द दि रु कू र्य व रु य मा कू मा रु व रु ॥ सि

पूजयत्यनूयसादवरेरुकिचमसा॥ कुर्यादवविधापूजामन्यानां धाकके जिने ४॥ नीदयवस्तिय
नेवयाधिरुयनीरुभनूव॥ वकशंमधूनवाक्याकशंमधूनवचरु॥ वन्दयसर्वलावनयथाइ
क्षानवधरु॥ सुधनेवस्तिसंक्राविरुखेवद्वलसिखं॥ जगद्वथात्वंकविघनुसर्वयायिन
नकमचरु॥ मननमय्यानथासिद्धिसुविधागानकि कुरु॥ गयसासिद्धाकनेवचलुभावनसा
धनी॥ निस्तुनभाहजालनवाधरुनीन्नेलेमन॥ कामंभवऊयत्कामिमिथ्या जीवतुजायक। मिथ्या

याजिवनाकया॥ वाकुनवर्कागिल्लयनऽ नलकालकुमिथ्या॥ जिविनगंसयऽ॥ अकजर्वसाधनसि
 द्विऽ कामनेवाजिनास्मकेशयककामास्तथावाचनयसा स्मार्तनयिउथन॥ नययथयथालाव्य
 गृन्यादुदभवव॥ गन्धस्वजिद्यतकुर्यात्तुह्युथदसमूलम॥ स्वर्गस्वर्गर्मनैकुर्यायकका
 भायभवन्न॥ रुच्यद्वीघकनैवद्वैचदुवायेकनयनऽमातऽयकैर्वयकनानास्तिनवस्तमायाका
 यन॥ मान्थथायनक्कासिसुखेनायसुगीक॥ निरुनेवायीदथनययैकत्वामदहन॥ म

वन्तिकामीनिनीत्याकाममाययमायना॥ वसुधावसयदंष्ट्रायाधिश्याविनेसमाजिको॥ सखा
याकि कर्धनिहालाजनसस्यभवत्॥ लाककोकथनासार्थमायादविसूक्तस्यि। वसुधाजिकि
सहसावी॥ वारु॥ युगयून॥ गलानीनवद्वसिधियकामक॥ यागामानानिनादत्तनवेव
जनमार्थक॥ यस्मादकयूववृद्ध॥ सिद्धागायाविक॥ सखी॥ वजयमसमाथागाससखल
खकककसखनयायकवाधि॥ सखनखीविथागक॥ विथागकीयकयसुलाककोकथन

३५

च॥ यनयनेवनलाकायाकिवृद्धविभयना॥ कनकमेवनयनमायादविनृत्तकजिन॥ सर्वस्व
गरीधर्भनद्वानीदाकुथाविक॥ नानाभिक्षायदलाधरुस्वगायानसायया॥ निर्विवादमे
यवापियवस्वधविनागरु॥ ॥ अथरुगवकिपुह्यायावमिनामाह॥ कारुगवनमायादवि
सूक्त॥ ॥ कावलाया॥ रुगवानाह॥ मायादवीमृगधरुवसुधावकागरु॥ वभवरुगव
किगयायायुह्यायावमिनामिका॥ यावकुउत्तिय॥ सर्वस्वद्वथादेवनामना॥ मध्यमवय

तसु सर्वेषु वक्ष्यतीतीति ॥ चिदासावनात्तु न न्यस्त्यायास्मकं जगत् ॥ अथ रगव अवका
 दयासीत्युपेक्षयतीति ॥ ॥ रगवानाह ॥ कामक्षुष्टिगाऽसर्वेषु दयासायतीवकादयः ॥
 भादुमागंन जानन्ति सुोययश्च किं सर्वदा ॥ सन्निधानरुवद्यप्यद्वयं कुरु भादिनी न न जायते
 समाध्यानिह नरस्य न ह्युक्ता ॥ अनर्घलावथा राव प्रज्ञा होनास्वमी जना ॥ विरुन कर्षक
 दमयायनस्युधयितुं ॥ तथाप्येकलोकालकारिमक्षार्थकश्चिन् ॥ एकैकसंस्मृत्तं सर्वं

३५

यत्तव मायदाशा न स्मार्थरायितुः सर्वं गिद्यवाधियसिद्धयः ॥ ॥ एतत्कलवीमाख्यतीदृश
 मलाभाय दनकुं सुषर्त्तसायन लाद समक्षः ॥ अथ रगवती जाह ॥ किं त्वं रगवान् सना रा
 सिविनवालावा ॥ रगवानाह ॥ सर्वं हं सर्वं व्यापिय सर्वं कुरु सर्वं नामकं ॥ सर्वं न्यधभावद्वयं कुरु
 रुरुं यत्तु सखि ॥ अत्र भवेन्न न्यन सखाया निविनयना ॥ न न ननेन्न न्यन स्मिन्नाहं लोकद्वयं ॥
 कविद्वयं कवि सिधेय सखि कश्चिन् किर्यं कश्चिन् नान क न्यय कश्चिन् दया सन खेव कविना

नृपययकः कविः स्वयं नृपयाहं विश्वनृपानसंगयः ॥ अहं नृपययकः अपि नयं स कः
कविः कविजगि कविः यि कविभासि लुविः कविः ॥ कविवायुविनृपयाहं कविः नृपयमसं हि
कः मयि यदृष्टं नृपमन्यत्किं विदुः विदुः कः वसुधैव कुटुम्बकः काहं जन्माहं जनकयिहि ॥ विद्महाहं म ४०
हं सिद्धिः ॥ सर्वं नृपमसं हि ॥ अहं जातो नहं मृत्कनहं व्याधाः कनयाहं ॥ अहं ययमहं वा
यि कनकमर्कटनलहं ॥ जगद्वत्समं सर्वं मीदं नृपमभवत् ॥ क्लृप्तं समं नृपमभवेत् कथागिना

कलविनृपया ॥ अथ रगवनिज्जाह ॥ किं रगवनवेवदवृथं ॥ ॥ रगवानाह ॥ कवायवविधवृथं य
थासर्वं किं विनृपमः तया व्याकमिदं सर्वं जलस्य वनजं गमं ॥ ॥ नृपयकः नृपविनाखापी वलुम
हाभायदा नृपविनृपयदलकादसः ॥ अथ रगवनिज्जाह ॥ मरुतासाधनकरि साकिं यो हि
कथावन्था कनिं यथा गयामानक्षानादि कविनासनं व्याधिनासनं वद्विखन्नादीरुहना ॥
संगमविहाराय वापि यल्लिखमथा रुमं ॥ यद्विदी स्वधनं वेवदइरुदयादि साधनं सामर्थ्यं

मनक विहान निखिकं भवदयता ॥ जूथर गवानाह ॥ वदुनायन समाधिस्थ मनुसाधनमावतु
यथमेसाधय कसाधदसर्तु सकंदह ॥ मूनमकु निमित्ता नं सर्व मनुयसाधकं निखिकं नीयुन
यन कउसलिरवत्यन ४ वानयदाविथ घनुकस्या या यामलिकं ॥ समनधदवा स्य मनुस्यमायाया
किदि ॥ १ ॥ दसा ॥ कस्यासंययलेन मनुमनस्य साधयतु ॥ जूथर सिनुद ॥ त सर्वरुतयु कथादयक
कहाउमहावगादथा इदसत्याययलायीन ॥ सर्वयाधयालीना ॥ सर्ववगहादयाद सकतमउ

४१

नस्मिप्ररावत ४ सर्वा अविधिथा ॥ रिमूखिरुता ॥ जूथास्य साधनरवति ॥ लकं जयतु पूर्व सेवा
दलीरवतु ॥ कक ४ रुदुय कियद मानस्य ४ युति दिन कि संध्य जयतु ॥ यावतु पूर्व मासिगता ५ कस
कलना किं जयतु मरु किय जाकत्वासध्याक ॥ यरु कियवतु सर्थादयां न जयतु मरु ४ सिद्धा हवति क
म ४ यरु कि संध्य कर्मा टीकना कि ॥ जूथर गवति ४ साधकं नरवति ॥ यरु गवतु लिखायथ गायतु
वदुनायन मनुलमवद ॥ समकयथाधिक भाद क ४ ॥ कस्यागक ४ रुदुय कियद मानस्य ५ संध्य

सुखसुभक्तं जयन्तु ॥ कर्माक्षयार्थं मासि यथा विरुच्यते ॥ पूजां कृत्वा सर्वथा कर्मात्तु यत्नं नीत्वा ॥
यावत् ॥ कर्माक्षयार्थं यत्नं न कर्तव्यं त्वनिर्णयं त्वनिर्णयं जयन्तु ॥ कर्माक्षयार्थं यत्नं न कर्तव्यं त्वनिर्णयं त्वनिर्णयं जयन्तु ॥
कर्माक्षयार्थं यत्नं न कर्तव्यं त्वनिर्णयं त्वनिर्णयं जयन्तु ॥ कर्माक्षयार्थं यत्नं न कर्तव्यं त्वनिर्णयं त्वनिर्णयं जयन्तु ॥
मिनिर्णयं त्वनिर्णयं त्वनिर्णयं जयन्तु ॥ कर्माक्षयार्थं यत्नं न कर्तव्यं त्वनिर्णयं त्वनिर्णयं जयन्तु ॥
वर्था कर्माक्षयार्थं यत्नं न कर्तव्यं त्वनिर्णयं त्वनिर्णयं जयन्तु ॥ कर्माक्षयार्थं यत्नं न कर्तव्यं त्वनिर्णयं त्वनिर्णयं जयन्तु ॥

नृपिसर्वकारगवद्वृत्तगवद्वि॥ अथवाखमादिजनगुणिकायाइकायीदनयनाइकामलागुथ
र्यविद्याधनकःखिल्यालिख्ययदयकली॥ वसस्यर्गकातुर्वादकयथाहिमर्गयाथयनसर्वशरगवा
नददाकि॥ ॥ अथवायनकल्लवीवलिखाययीतुयर्चवकसावकैथर॥ अककल्लवीवयठकसु
यलाधयवआलीकक॥ अथवावलामाद्वक्षाःश्यामावनायीगुनवक्षाःनकावलावागवक्षाः॥
मावलाकुय्यावजीलीगीमालीखाययिकया॥ अथवायल्लावदिककवनालगवककार्य॥ अथ

वायदरगवर्गियकनामध्वजकार्यनरुआसनरुस्यायनियनध्वज्यायव्ववसाधनीयान् ॥
 अथवास्त्रियदवीनूयनध्वज्यासाधयन्सिद्धासयनिवृद्धमयिददाहि ॥ कियनवयसिद्धिः अथ
 वायव्यालिचयदखर्जयागधनसाधयन् ॥ अथवास्त्रययकिदखजयागकजास्याकादिचरुत्वा
 रुयवसाधकथन् ॥ सहजवद्युमसंभाषनयव्ववन्सिद्धिः अथवागवयटसिद्धिः ॥ अथवादा
 वादिचरुयनिमासाधयनमयः वभवकर्तव्यः ॥ ॥ अथवाजसाधननरुदायव्याजागिना

४३

समयसावककायमयवाः यथारोमर्चयकगर्वनयकात्वास्त्रेगखे ॥ समालन्यायव्ववृद्धाया
 कवायायनिगुद्धुसिस्त्रमासमकजयन् ॥ सोमोक्तमरुनियजीरुत्वास्त्रेनवादिजयन् ॥ यसावका
 वीरुः खजविद्याधवारगवनिदिनयवव्यायेनिः ॥ अथवास्त्रिगखर्जकगकडुलक ॥ अथवासावयक
 कामेविनसनि ॥ अथवाजवकशीशुलादिगसाधयन् ॥ अथवासीदीमययागसाधयन् ॥ अथवायदमासा
 यकयव्यायविगुवसुवृणकयव्यायवमिना ॥ अथवाककयव्यायदिनसाधयन् ॥ अथवायदहमर्द

लविभदिनसाधयत् ॥ नवशोवर्धुमयजन्मनमानिरुयेडेदे रुदविविकुमुनियरुकिनसाधय
 क ॥ सर्वास्तुसंयादयकि ॥ नवधर्ममयगधर्वसाधयनी ॥ वालिकमुमयगनउदवादावमय
 दवान ॥ वस्त्राविकुमुहभवाकुमुकामयवादिन ॥ भभानागात्रलिखिकेवाजीसे ॥ दचराउमम
 कालविलिकेधकमदनमयमन्यो ॥ दक्षिदकमयगयकि ॥ भखारककाहमययिनयलाभ
 दिनयिभवेयवालेमरुस्मभानधिरुगेविशोयोदिजाकिकिनि ॥ मन्यास्मिभयवामदवादि

४४

वगाली ॥ नागकगलकाहमयवासुकादिगार्गिनीक ॥ अशककाहमयोस्तविकी ॥ सजमद
 नीवभानकिथियाभमानदीदानिअनूवागीलिवद्रकाहयमइदिना ॥ वधकाभधनीभवजभा
 केतिनवविगदियदनीसाधयत् ॥ वटकाहमयोशी ॥ यविवाजानकेदवदावमय ॥ किलारुगा
 भसिदवीकाकनमावाविनिवत्तमावावकाइवसिशीरुधनीनिसकीययवागनसाधयत् ॥ न
 वसूर्योवधमेगववदवहस्यकिशुकगनिधनमाइ ॥ ककुवनवगदहा ॥ नवलाकखनवजयाजिमजे

श्रीपुरुषोत्तमसूक्तम् ॥ एवं विद्युत्सिद्धिर्विरुद्धं किन्तु साधयत् ॥ एवं मयः जीवति नरका
 ना ॥ एवं मयः सादिनरुतान् ॥ एवं वज्रकलादिनवगन्तान् ॥ एवं सर्वसत्त्वास्तु यन्मया दीनसाधयत् ॥
 सर्वज्जाह्नकागारविद्यानि ॥ अर्थकवालेन सिद्धिनि ॥ कदायनद्विदियवान् कुर्यात् ॥ न कथापीथ
 रुदाह किं यवानमानस्य ॥ न कथापीथं यत्तु यत्तु मस्तु दहुरात् ॥ कदायामजाननामस्तु याद
 नवाकभक्तवज्रयथावत्सिद्धिनि ॥ कथापस्तु स्यात्सिद्धिनि ॥ कदायामजाननामस्तु याद

४७

रुविदरुने ॥ ॥ इदं वक्तुमहावायवज्जागद्वृत्तं दृष्ट्वा ॥ खमैदिसिद्धोऽहं मर्कसाधयतिथाजयत् ॥
 यादाकामः (१) अहं मर्कस्तु नस्तु किंथाजयति ॥ एवं भक्तवाचावाचनसर्वानि धैर्यानां योमात्रुनन
 द्वाकभाकि ॥ एवं भक्तवाचावाचनसर्वानि धैर्यानां कुर्यात्तु नानिधिदहकि ॥ सर्वयाचनानां सक्तिमथाज
 यत् ॥ एवं सर्वसत्त्वास्तु यन्मया दीनसाधयत् ॥ एवं भक्तवाचावाचनसर्वानि धैर्यानां कुर्यात्तु नानिधिदहकि
 वदन्मामिजाजयत् ॥ एवं सर्वसत्त्वास्तु यन्मया दीनसाधयत् ॥ एवं भक्तवाचावाचनसर्वानि धैर्यानां कुर्यात्तु नानिधिदहकि

अशरुलसकवावादिजयमकुदारीयमकुजाकिनीदिगुदोनीगाउथन॥सर्वेभज्यसुप्रदिगाद
 नकालभजकिन्नादीकमप्रसाधयन॥अथयनिकयाज्यकसभावदथअष्टदलयनान्नर्गर्गमरु
 कुत्वासेयूनीकथकवरुजालनवयुयिवादानलम्बावथन॥वालानावकीकभाकि॥नक्षत्राल
 कमिनिथाजयकि॥भदभनवकुलथगुलसाधुयनविकीकल्याकनहदिगुजमरुमहिनि।खवा
 जिकादिनायचिथन॥कनककुकेनमखकिप्रथन॥यकिवादिनमखकिलिर्गहवकि॥यवक४कस्य

४६

मखकिलथकिझाझ॥चकुयथनिखनन॥ज्वयादीकीलथन॥गिकिमीगकिरुमथन॥यिव
 रुस्ययादीकिनथकि।कायेरुस्यकिदवदरुस्यददयकीलथकिथाझ॥मानवास्ति।किलक
 नलोदनवासंकावकसकनवायान्यागानिकीलथकि।कानिकस्यलिखिगानियथभवइनानि
 रुवकि॥दवदरुस्यामर्गकीलथकिथाझ॥यस्यगुदालनीखनरुमृष्टारुटयकि॥यिव
 दरुसुवाटयनिथाझ॥अहिमन्किरुभभनरुभनादालयकवथानिकयाइवाकयकि॥ध

वदरुस्यन्वाटयकिथाई॥ यरुलिकांकुचकेलिखिता कल्याणयत्न॥ देवदरुस्यन्वाटयकिथाई
 स्वर्गादिकमरुतगनवागानिथाजमरुतगनीमरुतयद्वैकुर्याकुर्याभासादयकि॥ यस्कारोदि
 भवभवलिंदद्याकुरुस्यसिध्दति॥ यायभागादियाधिमयत्रयिद्वमक्षरुनगननाहिमरुता
 निजमरुतगसमाज्ञयत्॥ अमरुतस्यामरुतगनासयकिथाई॥ सर्वव्याधिभाकिरुवकि
 रुधेवदरुस्योक्तमयमाज्ञयत्॥ रुद्रगानूदयन॥ देवदरुस्यविषनासयकिथाई॥ निर्वि

४१

र्थेकुरु॥ जर्ववगिरुतमायकुस्वस्यभागतः नममरुतकगकेगनाध्यात्वायादयकिरुद्र
 द्याजयत्॥ वराशरुवकि॥ अमरुतं भवगमानयकिथाजयत्॥ जर्वसर्वदाकुरुध्यात्वाजयदा
 कुरुशरुवकि॥ अमरुतमाकर्षयकिथाई॥ आत्मानंधनंधन्यानिधमादियविपुर्धुध्यात्वा॥ जयत्॥
 यूरिभाकिविकिथाई॥ रुद्रमरुतकिदीपदयसंयुक्तधयपुंयकुरुकुरुनलिखित्वायकमविचेरुस
 रुतामूलरुद्रयत्॥ सर्वकलागिनागयकिथाई॥ वरुगुरुसूर्यगुरुवाकौनरुकनदधिरुका

नवायाउपनयित्वा स गच्छेन्न दधुन सप्रा श्रद्धयुताय विस्मययित्वा स काय गच्छादिकं कृत्वा
 हस्तं स्वाम च दधुन गावर्कं यथा विस्मयकानरुवति ॥ गच्छेन्न दधुन सप्रा श्रद्धयुताय विस्मययित्वा स काय गच्छादिकं कृत्वा
 नरुनि गानं वा थावनं मनः शिला व्यासाधयन् ॥ कर्कल दाली ककिल कना जमेन वा विद्याधनाय
 मायिकं अरुहो न उष्यायि कवसिकनदी ॥ ॥ अथ यानाग श्वन काय मय मन कनाग नाजका
 नयन् ॥ गंजल मध्य मूखि कथं जया हा कागुन हन २ जून क गिखी व र्था ययति ॥ था ज च न् ॥ द

४८

वाव र्थयति ॥ गगा इरुजला इध थ दीन वस्त्राय यित्वा वि सर्ज थन् ॥ अथ मर्चय व ला क थन ज
 थ दृष्टि रुह न ॥ सर्व वा क वृष्टि रुह यति था जयन् ॥ शुक्ति सा ह दे ग ॥ कन क ल्या ॥ अथ दि र्ति
 यम रुथा क ल्या ॥ क दय म ज्ञा त म य म न्न क ल्या ॥ ॥ अथ मा मे ना म रुथा क न कि य द क द
 क न लि खित्वा नील व रु द म् रुथा मा व र्था क लि रु स गि न सि वा हो क ल्वा म या द
 ला व ध यन् ॥ का ध व रु सा क ल्या अ म कं ग ल ना स या मि नि द ल्या ग ना ति ना स य ति ॥ व

धकावनागिरीपूर्वकिम्पूविंदुत्वादम्भस्यरुक्ममद्यादियुर्गुगवाधननिमद्वायित्वाशुठदंरुका
 सर्वद्ववादथाश्यसल्लुभिर्धुर्गगवनवकुमसात्रायनवमास्त्राययति॥ यदिनायविसेव्यवक
 दारुगवान्कूर्द्धशक्तिरुनखर्जनकियमानंदत्वाहंस्याकिष्ठरुक्काभेयुथकाभदद्यात्॥ रुकारुदं
 रुवनि। एवं सर्वव्याधिजकिन्यान्ययदवववलिर्दय॥ सर्वरुयष्ट्रयियधिरुमाहनवदाकभाकि
 ज्यत्रमूमकाकंसर्वकवाकि॥ द्विनियमानामकुस्याययभवविधि॥ रुकियमानामकुलासु

४८

रुयिगुमलीमलादद्याद्वनदारुवनि॥ रुयिगुमलिजाविकालवनायाविविकदद्यात्॥ यत्कार्य
 मूदिन्यमसर्वद्वानि। शयकल्यस्तुयुर्वरु॥ ॥ यत्सर्वविधिनाशुकायनियदमानय॥ यत्सर्वमासि
 यावत्यववक्त्यात्॥ मालामलादीदगसहजगवर्धसवारुवनि॥ दिवानीवि। शयमकुलीम
 लमकुवक्त्यात्॥ यथासुवंगामकुवक्त्यात्॥ दिविनीवि। शयस्तुमानामकुजायक्तविले
 यादिथक्सिधुभवसम्ययन॥ रुकियमूममकुगुनस्यकल्यरुवनि। शयनमानुष्यावानह

सुलींगगृहीत्याद्यगर्भजयकयस्यान्नासा आगच्छति॥ कामर्थमकृष्टा॥ उद्वोह विजृम्भ किमञ्ज
यातुर्दृष्ट॥ लोनीकयारुगभात्रीत्वरुभाभामहस्रनावयोरुगर्भजयकयस्यान्ना
सा आगच्छति॥ सूर्यसंस्कारिमलितं कृत्वा यन्मया नाउत्थत्॥ निर्याधिरुव किमनसा कल्प
त्॥ उदकं यविजय्य दृष्ट्यात्॥ वधिनं युव कि॥ वरुणं यविजय्या वरुणं युवत्॥ सर्वजनपीया
व कि॥ लवर्णं यविजय्य यस्यानयानादृष्ट्या रुवसि कलाति॥ एवात्तनं कुं यस्या गलवक्षदृष्ट्या

७०

हिमकासलो रुव कि॥ आदिवालि मूल्यायस्य सिधा कनाम्ना जय्य कमाकर्षय कि॥ विजलभाभमव
यस्या गलवन्धा किमविवाभारुव कि॥ काकनायन इना रुव कि॥ यन्मखक गव इना यन्मया रुव कि॥ सु
कगव इना रुव कि॥ नवं यस्या यस्या कसुमादिन इन्द्रियक॥ कस्या कस्यो यन्मया यन्मया वरुण रुव
कि॥ यस्या नामा जय्य रुस्यनका क कि॥ अनिमिषनयभाय दृष्ट्या जय किमव एव रुव कि॥ ॥
कुकिद विमरु कल्प॥ ॥ वनिम अनवलि दृष्ट्यात्॥ सर्कय दवया विविद्वादिभक्ति रुव कि॥ य

यद्वयसमन्वलिमर्हयेनलस्यसिध्दकि॥सिगय्यगनावक्तिनगमावसूगन्धिजलसनावदधि
रुक्कसनाववुवकिगभाववदुदय॥रुवाहलिविकामकयसादानागे॥उदधुमसुभावनवुठामेव
लिगृङ्गाजमूककार्यमसाधयदुदह॥वुधधुलनगकनालिमजानीवदयक॥विविकारस्या
हमर्हसिध्दकि॥अथरुगवनामत्रमनुवाधुलनगकजधनकइकेलनगुर्विन्धारुगार्थकवज
अथरु॥विधवसूखनसेयुयक॥अभनेवयदामकदधुकिरुवकि॥सर्वरुङ्कदमायियथममा

लामयः रुद्राय नमः ॥ दलकमनः मध्याग्रात्रनालकनलिखत् ॥ नीलसुन्दरवयुयिस्वामि
लिनगैधनयम् ॥ सर्वेश्वरकारुवकि ॥ द्विजियस्याय्यविधिः ॥ जवमन्यरुद्रकन्थोकमयनव
निथाजयम् ॥ रुद्रैव सर्वसिद्धिरित्वावभाकसंथागिन ॥ ॥ सुखकलत्रवीमाख्यपीत्रुमहाय
यवकुरु सर्वमयुः सर्वकल्ययटभाद्वादसमः ॥ ॥ धर्मरुगवनिप्राह ॥ ॥ स्मरुयथा
गिनीकनसम्बन्धवदयत् ॥ चर्याचकीटगीकार्यासिद्धिः कमाशुमल्य ॥ न ॥ ॥ रुगवान्नाह ॥

मानशीयादिषेड्यवृद्धसासन इव काश॥ कथांभवधनेगुह्यसुखंस्वशक्तिरमाच भग॥ ज० ७॥ ४८॥
 र्वादिषे स्याद्व्यभिभा मागव ४८॥ ४९॥ ५०॥ ५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥
 स्वयनथादायैष्टाददद्यान कल्पन ४८॥ ४९॥ ५०॥ ५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥
 यानसखागच्छन्त्यागतिं॥ कनकनेवया यनयागीभिर्द्युयसिद्धिभिः॥ अथ द्रव्यवजिरुगव
 कभवमाह॥ कथंरुगवत्वियनिसम्भवेत्तस्य॥ ॥ अथरुगवानाह॥ नागवदन्यमना

५२

गवद्विदास्तथवद्विनाविधनायिविषयैरुप्याः इयदगपुथागक॥ निस्वरावजगत्स्यसि
 काहमिहिरावयन॥ सगुर्यनाववक्तुसर्वयथाकायिनवधन॥ सर्वयायक्यं कृत्वावियविः
 तिकनेवसिद्धिभिः॥ नेकभाकिरुगुर्ययोगिथालोककल्पन॥ वियनिसम्भवेत्तुस्त्वधिकस्यनविश
 क॥ यार्यनास्तिनयूयकनी४॥ स्वरावस्वरावक॥ लाककोकृत्वासाथमयानकृत्किदुर्ग॥ सुठदानी
 (संस्कृतस्यवतुनयनराषीय॥ यागिलाकावगावायसर्वसत्वाथकवधायकठसम्भवेत्तुस्त्व

त्वमधिनायीथा॥नचयानिवधक्योन्नयनस्वायसनरी॥यनसुदीहवदीनेवराययनमुखाव
वःमघीनेवयिधविमानलाककोकल्लदानय॥यकटसिद्धायदंकरसादवकसमानरु॥
उकासुचनार्धरुच्यदानीयकथन॥नलभोलैगिलकूर्यानीउककलेभामुथा॥नानालंका ७३
नकैरुलाधनयदात्मदहकायादथानयूनकार्यमखलाकनथकटो॥सद्यदरुनथाखजया
गीवामयुधनयन॥मोलोवमूडकीकार्ययकषट्ठयथागनयकवीनेउककुर्यो॥भयकन

वियलुयन॥दगद्याह्यशुभुगुचवयोसमानरु॥यर्वाकाऊनरदनकन्यावेवयकल्ययन॥
कन्याथागामलंकात्रेम्भुयस्माकेनिधग॥सयकलीकवेदद्यात्वाभवेवकयावक॥कूलरुदन
वेक्योदुर्दुहदाप्रतिसुना॥गृहीलाखदलियरुयनकलिधोसमादिन॥स्वयुयाउसमागुचवयो
भगासमानरु॥नलादेनलयनकूर्यादावादिनिमित्त॥अथवाअनसाकूर्याद्यलारु॥यवरुन
निह्नयकसमयादनयकयरुदन॥यर्वाकाभेवथागनद्यायादलंसमानरु॥सिद्धाकसर्वथा

आगिनाशकार्यविनया ॥ यक्षया यस्मात्तागानखंदद्याउदुदने ॥ चमनालिगनं चैव सर्वस्वयुक्त
 भवत ॥ दानपानमिनायर्मुखवधनसया ॥ नृपयकायवाकीरुं सैवर्गेगादसोख्यक ॥ गीलयानमिना
 रुधासहजोनाचनखकर्म ॥ साकनं पिउन्नेवदाकियानमिनालिचं ॥ भादनदीर्घकानेउसूनकं
 कूर्यासमादीर्गं ॥ विर्ययानमिनारुधाकसूयविरुथाजयत् ॥ सर्वेगावयनधनध्यानयानमिना
 मनादिनयरावथानोसायक्षयायानमिनायकिर्किगा ॥ सूत्रगेकथागमागनयर्मुषट्टयानमिनारु

५४

वरु ॥ यक्षयानमिनायर्मुक्षानेयर्मुफिकथका ॥ सूत्रकथागसमायकाथागिसंरानसंरुठ ॥
 सिद्धाकदगमागदयर्मुक्षानसमन्विक ॥ यथालगसमरुकेरुलेय्यसमन्विकं ॥ एकद्वय
 वसेवाधि४संरानद्वय४सेरुका ॥ सणथादगरुमिणावाखवद्यवनसंभय ॥ रुमाउमृदिनारु
 थाविमगाचियाकिरुथा ॥ यराकनिसूइऊयाइरिमपिइनेगमावगामगासाधूमनिधर्मभ
 धासमनकयराकयेवव ॥ नीनूयमाक्षानवनिथवेवथादसर्गैरुया ॥ ॥४॥ थकनवीनाथ

गीवकुमस्तुभाषदमरुचर्यायकलपथादगमः॥ ॥ अथरुस्मिन्मयदिसमकरुक्षानामवग
 आगिरुगवकमकदवाचरु॥ यवियष्टमदनाथकिमर्थमवनसंरुके॥ एकस्ववीलसंरुवव
 कुमस्तुभाषदमिच॥ ॥ अथरुगवानाद॥ यक्षयायासमाथागा॥ ननिधनसंरुवमपिदी॥ य
 क्षयायासमकेरुचः विनागदनवालिनी॥ कनेवाचनभर्याने॥ वजसंरुवस्वनीनी॥ दिरुजेकः
 मुखंभरुसंरुवमयतिधमनः॥ खप्रायागकवाखा॥ उयक्षलीगनरुयनः॥ सख्यर्थकमा

७७

सिनेयनसंरुवदविस्मिन्॥ आसंसावेचनकिष्टदिव्यसोख्यानमस्मिन्॥ कनदभवलख्याने॥
 सर्ववदसुसविने॥ अवर्लवेयलवित्वासर्वेयेयविकाजिना॥ सत्त्वार्थदिव्यक्याग्यावदाह
 कसयवै॥ अथसमकरुदवाचा॥ अकावकाकिंभाख्याने॥ वकालनकिमयन॥ लकात्रदी
 मीमयककिष्टर्गनामसंगद॥ ॥ रुरावानाद॥ अकावकाकिमसंरुजस्वरावयुकी
 वकात्रदीनन्दयनमानन्दसिद्धिजानेद्यास्थेस्वउवानन्दस्वरावायुकी॥ लकालेनललनालाः

केलि सनन मर्क ॥ अकावदायक यस्मात्तदायक ॥ यस्मात्तदायक ॥ यस्मात्तदायक ॥ यस्मात्तदायक ॥
 खल दत्त ॥ सनन कस्तूरी लसुन कस्तूरी कस्तूरी ॥ विनाग मर्दना द्वा ॥ १ कस्तूरी ॥
 ४ ॥ सुख मर्दना ॥ सोम मर्दना ॥ वायव्य ॥ काधना ॥ यामर्दना ॥ विनाग ॥
 पुनामावे मर्दना ॥ दीमाना ॥ वायव्य ॥ काधना ॥ विनाग ॥ इन्द्र ॥ मर्दना ॥ मर्दना ॥
 र्थ मर्दना ॥ मर्दना ॥ दत्त ॥ यस्मात्तदायक ॥ विनाग ॥ मर्दना ॥ अनाम ॥ यस्मात्तदायक ॥

५६

श्रीगुरुने ॥ विनाग सर्व मर्दना ॥ सिद्धि मर्दना ॥ ॥ ॥ यस्मात्तदायक ॥
 मर्दना ॥ वायव्य ॥ मर्दना ॥ यस्मात्तदायक ॥ ॥ यस्मात्तदायक ॥
 कर्तुं सिद्धि ॥ यस्मात्तदायक ॥ ॥ यस्मात्तदायक ॥
 मर्दना ॥ मर्दना ॥ यस्मात्तदायक ॥ ॥ यस्मात्तदायक ॥
 मर्दना ॥ मर्दना ॥ यस्मात्तदायक ॥ ॥ यस्मात्तदायक ॥

यद्वा नुगच्छ। लिना कुंज्या वाधरा वयम् ॥ सिद्धा न नन या वानः धार्मिणि घुन स गय २ यद्वा नहि
 न वाधरा वयम् समाहि न भरा वना व न निष्वा स्त्रे वाधि नाश्च मवा प्रयात् ॥ अथ रुगव मि जाह ॥
 विगुह्मि दव नाया सु आ उ मि द्वा मि ना य क ४ यद्वा क म पु रानो उ विगुह्मि म व द य रा ॥ ॥ अथ
 ल ग वाना ह ॥ अथ न सं य व द मि वि द्वा द्वि सर्व शा धने न न ४ च व न सं च उ दानं च उ न स श्री वि द्वा
 न व द व द्वा न न प्र क्षो सं स ज्ञा र्था र्था र्मा र्ग न ४ च क य मं वि रु का श्म ॥ य य या नि ४ वि श्व व ज वि

५१

श्व नि र्म ग म ॥ न व न वी ग य व न ना दि नो क न क म स ना ग वि दि कु यी न य मा द ल क य न र्म ४ व म न्य
 श्व क वि य स द ॥ म नि ला न ॥ न व स र्था शु क आ नि ४ ॥ ल ज म धा क य व ल वि द्वा वि श्व व ४ ॥ य र्वा यी
 दि ४ ॥ य गा व ल नो ज्ञा य दि भा रु व ४ दी नो ॥ सु नै कि म दु ल वि शु द्वि ४ ॥ रा व ना वि धि न य क ॥ य
 थ म य जा य न क र्म स र्वा वे वि मि र्म क र्म य र्थ स न स र्वा न म न ल वि मि र्म ॥ स व द्वा ह ज न द न र
 व द ४ ॥ क र्वा गा न व र्थ क र्म स र्वा ॥ य न था नि ४ व द स र्था शु क आ नि नो ह क नि मा ४ य

उत्तरकन्यास्वविले॥ जू कायपीकामा मकिमाताजनथावन्धान्या नूराग राट्टापी नविदयत्वा मातर्य
नूरागकभाहन सत्वविलवत्सक म मरु॥ य मासिर्ग १५॥ १५ यिह भाव गन स दया कथमा एगह
तीज भाकनवाहुल्यादि सिद्ध सुखाय सावित्र्या जनयति॥ इति ह्येति॥ एवमावलादथा माहव धी जट
दययिह माननिसंसन १५॥ गगनयवकिनाम्मात्रथरु॥ इति नथका मथरु॥ जन्माकनवाहु
ल्यारु॥ दिगिह सुखाय॥ खर्ज्यरुयाय॥ अथ या गयरुखरुयाय॥ याम ४॥ उरयात्सु मनसि कव १५॥

ऊनी॥ वामा ४॥ दयि सकयानयान तस वार्द्धदयि ४॥ सकय मातु यालन ॥ वामरु मिगतजा
नूय धियाननः स्वसंस्तन पद सर्वमान जासन ॥ व मातु स्वान्दमान ४॥ गिव कृ गमान ४॥ विष्
मरुमान ४॥ गकादवयु मान ४॥ य धि वी सकल मत्य कन्याय राग १॥ कमानो दीर्घ सिद्धय
प्राप्तनाथानि ४॥ वद सूर्यासन ४॥ उरु ॥ गनि नज ४॥ यनू वनूय राव ४॥ सुनूय मरुव ४॥ नीला
विलान ॥ अकनूय पी नवदनावका ४॥ सूर्या म ४॥ सूर्या म ४॥ अथ वानील माका स ॥ अथ वानील

निभाधगुर्विस्ताननिभाधविस्ताननिभाधगु४नामन्यनिभाध४नामन्यनिभाधगुषजयनननिभा
 ध४षजयनननिभाधगु॥ संस्यगंनिभाध४संस्यगंनिभाधगु४वदनानिभाध४वदनानिभाधगु४
 स्यानिभाध४स्युनिभाधगु४उयादाननिभाध४उयादाननिभाधगु४वनिभाध४वनिभाधगु४
 जातिनिभाध४जातिनिभाधगु४॥ जनामन्यगंनिभाध४वदवद४स्वकोमनस्ययायासा४निभाध
 क४वमस्यकवसस्यमहगाइ४स्वस्व४स्यनिभाध४वनि॥ यनित्यास्यद्यकलाका४यतिस्व

वनिन्धन॥ वद्वारेयद्ययंननोदयंशयसिध्दमि॥ ॥ अथरगवतिउवाच॥ कथंयंउरगवन्
 विद्यादिविद्ययन्॥ ॥ अथरगवानाह॥ कियविवर्तमिदंवर्कःमनिनादियुहदत॥ स्रदणका
 नमाष्टागं॥ धर्मसर्वजिनेवीर॥ नशविद्याहयायादमस्तनमनन॥ नवयधनयविरुसुत्रीनाका
 जंरवतिस्वर्थ॥ नस्मास्तकाभाहवतिस्वत्रिनिध४नशकायसंस्कावजास्वास्तस्य४मोवाय्य॥ का
 गोविकर्कविद्यामोमन४संस्कावाःनागधयमाह॥ परियकाविद्याथसनिविगर्कायनिसुनीगुजाति

विद्यानयनिसूक्तं गृह्णाति जन्मकारुणिकं द्विष्टमखशमस्याविरुद्धनरुवनिधयकानंवा। च इति विरुद्धन
 (५) उ विरुद्धनं द्याव विरुद्धनं किं वा विरुद्धनं मभा विरुद्धनं काय विरुद्धनं मभा विरुद्धनं च किं॥ चरियूका जवि
 आ यन्मनि गृह्णाति जिह्वानि रुद्रयनिसूक्तं गति विकल्पयति॥ कस्मात्तामन्यमा मन्यवत्तामिदना
 दयः नृयन्य भवतु किं वा म हि सं क्रिय यिद्यु यित्वा नागनयेत्यर्थः॥ उयादानय च स्तं धा
 न्यत्ता विद्याय निगमनियर्थः॥ कथं वदना जीविषी सुखा इह स्वाधिति॥ सुखावसुनां स्वनयनशह

॥ कृष्णसिंहाय ॥ ३॥ सुखावा ॥ ४॥ मा न्यदि ॥ ५॥ घावस्य ॥ ६॥ वधिरु ॥ ७॥ विलु ॥ ८॥ विलु ॥ ९॥ विलु ॥ १०॥ विलु ॥ ११॥ विलु ॥ १२॥ विलु ॥ १३॥ विलु ॥ १४॥ विलु ॥ १५॥ विलु ॥ १६॥ विलु ॥ १७॥ विलु ॥ १८॥ विलु ॥ १९॥ विलु ॥ २०॥ विलु ॥ २१॥ विलु ॥ २२॥ विलु ॥ २३॥ विलु ॥ २४॥ विलु ॥ २५॥ विलु ॥ २६॥ विलु ॥ २७॥ विलु ॥ २८॥ विलु ॥ २९॥ विलु ॥ ३०॥ विलु ॥ ३१॥ विलु ॥ ३२॥ विलु ॥ ३३॥ विलु ॥ ३४॥ विलु ॥ ३५॥ विलु ॥ ३६॥ विलु ॥ ३७॥ विलु ॥ ३८॥ विलु ॥ ३९॥ विलु ॥ ४०॥ विलु ॥ ४१॥ विलु ॥ ४२॥ विलु ॥ ४३॥ विलु ॥ ४४॥ विलु ॥ ४५॥ विलु ॥ ४६॥ विलु ॥ ४७॥ विलु ॥ ४८॥ विलु ॥ ४९॥ विलु ॥ ५०॥ विलु ॥ ५१॥ विलु ॥ ५२॥ विलु ॥ ५३॥ विलु ॥ ५४॥ विलु ॥ ५५॥ विलु ॥ ५६॥ विलु ॥ ५७॥ विलु ॥ ५८॥ विलु ॥ ५९॥ विलु ॥ ६०॥ विलु ॥ ६१॥ विलु ॥ ६२॥ विलु ॥ ६३॥ विलु ॥ ६४॥ विलु ॥ ६५॥ विलु ॥ ६६॥ विलु ॥ ६७॥ विलु ॥ ६८॥ विलु ॥ ६९॥ विलु ॥ ७०॥ विलु ॥ ७१॥ विलु ॥ ७२॥ विलु ॥ ७३॥ विलु ॥ ७४॥ विलु ॥ ७५॥ विलु ॥ ७६॥ विलु ॥ ७७॥ विलु ॥ ७८॥ विलु ॥ ७९॥ विलु ॥ ८०॥ विलु ॥ ८१॥ विलु ॥ ८२॥ विलु ॥ ८३॥ विलु ॥ ८४॥ विलु ॥ ८५॥ विलु ॥ ८६॥ विलु ॥ ८७॥ विलु ॥ ८८॥ विलु ॥ ८९॥ विलु ॥ ९०॥ विलु ॥ ९१॥ विलु ॥ ९२॥ विलु ॥ ९३॥ विलु ॥ ९४॥ विलु ॥ ९५॥ विलु ॥ ९६॥ विलु ॥ ९७॥ विलु ॥ ९८॥ विलु ॥ ९९॥ विलु ॥ १००॥ विलु ॥

गविरेवयवसः॥ ॥ नमो जातिः युक्तिकनकाहिनीस्य किः॥ उयादानं यकः स्वंधलारुः॥ नमो जला
यूजादनिस्तवः॥ मननं विरुचेरुनिनाधः॥ नमो जलामवतविकथनः॥ अकाकूलारुवकिः॥ मूकियान
यथैविकुहियविदवगा॥ व्याधाइयडवधुः॥ खिरुवकिरुदवयूनर्मनसिनिथीजनयोमनसिरुवकिः
॥ इमनायिकनाय्ययडरुः॥ उयासासिरुवकिः॥ ॥ जूयमर्थः॥ गजविद्यादियजयकनयय्य
नमो नमो रुवसवैवः॥ नमो नमो रुवसवैवः॥ नमो नमो रुवसवैवः॥ नमो नमो रुवसवैवः॥ नमो नमो रुवसवैवः॥

नाजातिरुक्तकर्मभाष्यविनायकनायकभाष्यविनायक॥ नरुक्तिरुक्तकर्मभाष्यविनायक॥ नरुक्तिरुक्तकर्मभाष्यविनायक॥
 सस्यर्गउत्तरं॥ नरुक्तिरुक्तकर्मभाष्यविनायकनायकभाष्यविनायक॥ नरुक्तिरुक्तकर्मभाष्यविनायक॥ नरुक्तिरुक्तकर्मभाष्यविनायक॥
 माननभाष्यविनायक॥ नरुक्तिरुक्तकर्मभाष्यविनायकनायकभाष्यविनायक॥ नरुक्तिरुक्तकर्मभाष्यविनायक॥ नरुक्तिरुक्तकर्मभाष्यविनायक॥
 का मस्तुत्तरं॥ नरुक्तिरुक्तकर्मभाष्यविनायकनायकभाष्यविनायक॥ नरुक्तिरुक्तकर्मभाष्यविनायक॥ नरुक्तिरुक्तकर्मभाष्यविनायक॥
 नरुक्तिरुक्तकर्मभाष्यविनायक॥ नरुक्तिरुक्तकर्मभाष्यविनायकनायकभाष्यविनायक॥ नरुक्तिरुक्तकर्मभाष्यविनायक॥ नरुक्तिरुक्तकर्मभाष्यविनायक॥

यश्चकिः सुखं इका भवत्सुयाददाति ॥ कुरुकुलसमनसि रुयमस्तना गान्नाला जवधुनिना त्यायी
 दुवर्जनिगल्यमा दुःयनमशुखिनसुवजधावे श्वरीना लाकको जन्मनाया स्तित ॥ दाननाकन विरु
 दक मारुवति ॥ सचक्रभनकलसा म्यवृद्धनयसि भायसा धाम्ना नवलीदं सलीवा मासे धेनेव मार्ग
 दयविष्ट ॥ ममेव मार्गं निगमा जातिरुवति ॥ दहिवा सुंरुवी द्यामि ॥ तदारुविधी कुर्यन्ना लावति ॥
 विमानविषद्वयः कुरुजात्मानं मुम्ययश्चकि ॥ लाविमाह सिना मार्गं दयविश्चयमयमित्याः पूजन

६३

मिथीरुयनस्थानवजन्मनाया विष्टकि ॥ नस्यर्धवतिगद्विजायक कदवमविद्यादिरे लाका
 यायक ॥ लाका ययक स्कंधा चवकवइ ॥ खसेसावितायक स्कंधा ॥ नवइ ॥ धनकार्यमसिभाकाधि
 ना ॥ अविद्याविनिभा धास्कंधा लावः शुभ्यगा रुद्धानन दुद्धनकार्यभाकाधिन ॥ ॥ नस्यानला
 वाभाका नाया लावः ॥ नस्यालावा लाव विवदिगं यहाया थासंयुं मसामसुवन् यिनशीदवना
 थासुर्कवडनानन्दकमूर्ति विरुं रुवनी वायापति स्तिमभाद ॥ जालना लाय रुलाका नागक

आद्ययंगनः॥ अत्र लार्थयविह्वानावृद्धसिद्धीसमिष्टानि॥ भवनविषयासंगसूत्रवस्यमृदिनेहीयवि
 रू॥ विधुन्ननविनसुमानंरुदधनरंगयावकथिकं॥ ॥ एतत्कलसीनास्यथीवदमसुवायवगुरु
 युक्तिस्समस्यादयटलशधाउग॥ ॥ अथरुगवदिज्जाह॥ नाथदंसयूटशुक्लकालिगंरुग ६४
 रुन॥ एवद्वगककककुंयधिवृद्धयैलनासना॥ श्रीमनाथनासावरुद्धभावनरादयि॥ शुक्लस्य
 रूतनाडकाडावलावाहुदिधागकं॥ ॥ रुगवानाह॥ साधुसाधुकुतंदविधुदहमधधिनसाया

वरुनानाविधरुद्धगुलाकार्यसिद्धया॥ गविनंमधयदादोयसाकर्मसमासमालरुग॥ शुक्ल
 शुक्लवदुंयुद्धमकालिगंरुवृ॥ विह्वलाकाथमागुद्धवदानंयनागकंयनागवीजयधमंकिः
 चिरुद्वयिलागुडयानंदमिजिदुंयुतागंन॥ कनकाधलामरिनसंगेनहीलभाविनससंधवी॥ यित्वा
 लिस्वात्रुदोययुकातागवयुर्वना॥ कनकास्वनसंगेनवीवलवनसंयुक्तं॥ नोदयमद्यथागवरुद्ध
 लवदास्यनासनं॥ हिलभाविनसकिक्ति॥ संधवनसंयुक्तं॥ द्यायायावस्तिरुंकुलाहयसिरुसना

गनो॥ कनका च सरे ला॥ कूचमनव गावय ४ पान या गाह वरु लना गजवन संगय ४ान सकसाय
 मजा या ४यी वलवन संयकी ४ वृत्ता ॥ १ ॥ रवधन्या कृष्णान मधून अकर ॥ २ ॥ कावादि दिन कुर्या यथा
 दा यधना नरु ॥ ३ ॥ नव वरु लदं क शनि रुन वा न्य था यो य ॥ ४ ॥ मम सी व क ल व लु रु य म लु न रु द
 हा स क धा म लो के क ला या न वा री ज न क ॥ ५ ॥ य हा र पा व जि व लै उ क ॥ ६ ॥ रा क व द न ॥ ७ ॥ उ व लु म
 ला वा य रा रु दि द्या म न म क न रू रु ॥ ८ ॥ स कि न ना वि क ल व न व नि म वा यि भा दि सं या स्य म

६७

तुलन संयकी भदं सुकन संरु व ॥ १ ॥ लि ग क र्दु सु ना ना क र ग स्या यि वि म द ने ४ ॥ स र्वे का य वि म दे व व र्द
 क क न सं ग य ४ ॥ नि न खा क ज नि क ला सु द यि ला व न न वे था नि म म धु नी दि य स्य य थ द व र्द न ॥ २ ॥ दा
 ठि म स्य ल व क ल्के ४ य थ स र्व य क ल कं स न म दी कं व र्द स म् ली नि का ० ना ग न ॥ ३ ॥ सु क स व य व था य
 गां वा रु ल मे क र्के ४ क ल्के म द थ क ली गं स न क र्दु क व र्द न ॥ ४ ॥ रु ति यि य नी थ ता य ना जि ना क र्क स थ
 मा दि य न व नी क म द ना लि ग व र्द न ॥ ५ ॥ स वा न क र्द ला हि नी मा दि थ म व मी क ल य ना लि म वृ दि ४ व र्द

वनमनाथगन्धामूलं यीत्वा माहीवनवनिकमिधैधरुनरुनकाटवज्रसनासंस्तुयथक॥ न नाभा
 हीसकनाट्टलिंगमर्दयित्वा पूर्वा कननालिपयं सुयथं देववर्द्धक॥ पुष्टं यथायकं पुननका
 स्तनकं या घृतसाधयित्वा माहिखयान्यः स्य कनलये यद्भिथीलाथानि गोदाखवति॥ यमत्री
 उखननिमृतावउसिनयुक्के सिलनेलयावर्द्धये॥ कनरुगायुक्ता योगधाथिसितीववे
 घाघ्यानत्वादिकं शयति॥ निम्बत्वकाथनरुगायुक्तालयन्नीत्वा साधये यच्च सोकोमार्यसु

गधिसुरगादीगुदाथनं खति॥ रुविगात्रगागयक॥ किंशुकदात्रलालेकं यवदात्रलालेकं क
 दलिकात्रलालेकं जलनयित्वालयमापतरुगककलिंगमात्राभान्यस्यादयति॥ न नाहनर्म
 येयद्भुतुमिथिनं कदनेलं सुफाहस्युयीनं कनलिंगादीकं सुदयगनयूनकभयाहखति
 महियसूकनरुसिककटथदनेलायां मर्दनान् सननादीनां वृद्धि॥ जाकियव्यमीलनयीत्वा
 रुगमूर्द्धकथद्भुसिगरुवति॥ महियनवमीकववाकक कवनागायनालीर्मदनान् सुनवृद्धि

दकपदानेयं कलि मलि गम हर्षवनि ॥ दलु अत्यन्त मूल गव्य घृणनयिव द्रुत काल गुप्ति वीरव
 नि ॥ अथ गधि मूल घृणनयिव द्रुत निरवनि ॥ वला हनिव मासि गभकं नागिल मादिक मधु
 संयुक्तं यो व द्रुतं यो रवनि ॥ वना हवा न्या मूल मधु काल कर्तुं व धना गरी निरवनि ॥ वला
 मूल उदक नयित्वा यो व उदक्य वा हना सयनि ॥ अचूले एव मूल सजल गंध द्धि मधु घृण
 ना धर्तु ना सर्व गभं रू रवनि ॥ काले विसा कनी रू दय द्रुत काल द्धि शाम धन दधिरु द्धि एव गु

६१

कवधी ॥ मुक्त गानि गल द्धि क कवधी ॥ मुक्त गानि मूल न गानयित्वा यो व द्रुत कवधी ॥ अमन कि
 वलु जल न घृणन मधु ना वा वि काल स्वली ह न व द्रुत कवधी ना न र्थं पृष्ठ व जनयति ॥ अमन कि वलु स
 मधु न मधु ना रू दय द्रुत कवधी व द्रुत ॥ एव न द्रुत लामूल अथ गंधा गोत्र या वा गु उन स म न सि क
 धरु कथ शो व न गयति ॥ अह न ल व वलु इ धा दि ना रू य द्रुत व र्थं यथा ग म डि ग ना य ॥ अमन कि न स
 यल कं वा कू वी यलु क धे क वि व त्या न ॥ मुक्त गानि एव न मा स न य क ग म य ॥ वा कू वी क धे कं म क

मज्जनिकाजिक्कनइ रथनवायीवद्धाभसाननथावनायुधरुशमलुयीवुधुघनरुयंकेहिस
फाहनदिनरुवयाककिरुसुनविमयुधुयलेकःनकभमियनेकःनकवुधुगवीकीवतसुनावद्ध
यनववधयु॥यथमकुलेभनावमकनीत्वासनादिकंमज्जदत्तापचयु॥ननारुदयप्री
लुइधराजयकवातामयवजिंकंइसकाहययवत॥यथाकियांनत्थारुनकीया॥नकक
मादययठंकिपूनरुलिच्छति॥नकावनीयनिकनहिनाजिवकिस्मायुयध॥नकावुटमल

६८

धूममधुनाविजालयद्वममारुदययलुथवुरुवा॥जामनकिरुनिककिरुगनारुपीयनिमविचि
नारुवुधुनिमधुसर्कवायाउइधनरुनयमानगुहिकांकर्या॥नकागुनिकोकेरुदयनमास
नतिगमायु४कुमानीरुलभकंघुनदधियकंरुयंकेरुसकाहिनजीसनायुभायवकिवाधगः
धनागवतामासानदिगुदगुठनरुदयय॥महावलावनि॥रुजावीगुठकंरुिगुवहनि
कि०के०जलादिनारुदय॥महावलास्याहसर्वजानंदवनाकालंरावयनमंरुदवायधमं

निष्ठिति॥ ॥ ॐ शकलबीजाख्यातीवृत्तमसुभाषणकृतशुक्रादीवृद्धियटलसुदम॥ ॥ अथ
 गवानाह॥ ॥ ॐ मूलं काजिकनयीलागिभामर्दथनगिभः पुनं विनयति॥ ॥ अगस्यगानेन स्यवाकाकम्
 यस्य सेधवकलुपूनयकलुभागनासनं॥ ॥ शुक्रमर्कटकेलदद्यात्॥ ॥ कटकपिप्यलिजामलकीद्विजा
 ववागिगिनयवटिकाकात्रथलनाजनास्तव वक्रनागनाग॥ ॥ मधयिप्यत्यावागयकथ॥ ॥ कर्तुगुधमधू
 नाकुथडासुधनास॥ ॥ कटकधूनाजामस्तवागिभामगनाग॥ ॥ कागिकनकेलसेधवइवो मूलवकास्यगी

६५

घृष्टाकाथवक्रपुननास॥ ॥ धाधकलुपुलाककोलमूलनकुलादकनयीवत्सु उशाकाभलनाग॥
 जलकाकनसं दर्वानसंदादवयव्यत्रसंभनयीलानयउद्यानोगिकथानकनयवति॥ ॥ काथइचनमू
 लनकुलादकनमूखवावदनकनयवति॥ ॥ सराविका मूलववसादलपुडीविनस्यति॥ ॥ गुडमूलनदककि
 रकेविनाग॥ ॥ ॥ ॐ गंगयइधैककटयदयवत्॥ ॥ यादयकलदककटकटिनयति॥ ॥ मूलकवीजंयु
 यउष्टानकवदनकदपिषादकभासकंधादीनस्यति॥ ॥ हनीरमानसुगुधैकेलनयिवस्यलमर्ककय

प्रागनाग॥ माहिषदधिराजनादकिसाननाग॥ अमरकयनागनालुथा॥ कूटजवल्कलरागदयमयी
 चर्दभुशुकिनाजकलागंतमनकगयीवाकगुहतीनासनाग॥ अमनकीथीधालिचिउकजाडकयनागन
 गुडघनमधनाचसमरद्वयदिकालकागथीसविनागन॥ हनीनकिवलेमधनागथा॥ खदिनगाकन
 यवयवागुरुद्वयकदिनागनाग॥ अडनकंजिनकवदधामलुनवानयिवर॥ लवनसहि
 तंमूर्जदलविनास॥ ॥ गङ्गायवदामसमवारवुयगुनथासोरनंममलकाथम्यायीवरुथाअ

भनियतति॥ रुनिगकिविणकआडकंचममुनायिवरुनाग॥ जिनकंगुठनरुदधदागकलविन
 थति। यणवदानंदध्रियिद्यदामवागविनागन॥ रुनीनकिगुथारुदधयदामवागनाग॥ कउउयवि
 उंगसेधवदत्वामउकासुपीवदनिदीव्यदियतिविथीविनस्यति॥ माउलंगनगंगुठनरुदधय
 लनथतिरुनिगकिगुठनरुदधयइत्रामनस्यति॥ इवोरुनिडायिवायनाककुनाग॥ जननेवद
 उविस्सनाककनदंताद्यामादीवीरथति॥ कागमदकंमूलंकाजिकनपीवः। रथेवरुन॥ गुठकउ

केन यीव्याहासाविनस्यमि॥ अर्शनत्वं घृणादिरिक्तयद्दुदयथात्मासना॥ विलसदं यागुठं नरकय
 नकानीसाननाग॥ गुणगुठिनान्धुदघासर्वस्त्वापाननास॥ गुणं घृणनरकय हृंदय॥ योधाया
 नयोक्तुं कृष्टादथाविनस्यमि॥ शेरुत्वाचुं घृणमधुनारकयत्सर्वनागनाग॥ हनिककिवुं नि
 कालघृणमधुनाज्वनीहवाक॥ अथाविनागन॥ वासकयं वागववावक्रयीय्यलिवुं कवुं दीदय
 संधवनमधुनाचवर्गिकयोक्तुं नरकयविकालवाक॥ अथाविनस्यमि॥ स्वनं वमधुनं कनामि॥ वा

११

अथवशास्त्रविधियसि हनिककिदाम्कं खदिनां वमधुनायकाकत्वारुदयन॥ येवरुल॥ यमात्रिशुहनि
 नकासेधवास्मात्तरुदयनसर्वाजिरेकुं नास॥ गुणविममनायीधनयमहना॥ मासउयन॥ इध
 योयीय्यनिचुं घृणमधुलिचयीय्यकुं लहनागकादथान्धमि॥ लज्जालसवय्ययामलवास्थाद
 कनयीत्वालययहुं रिमलवात्तरुदयत्वाश्वननासना॥ गुणियवद्वनवरुदयद्वंदुकारवमि॥ अय
 किवीजं मयीवनयीवदीनययं यायनागनासना॥ उरुलानलिकाकृमूलेकाहगनाजं सरुकां नास

वीजं लाहृदुकाजिकं वशिर्ध्यामनककुर्यात्कृत्वा गुणवत्कनकमेधयित्वा ननमयेयम् ॥ न ४ सकाहं वध्वा
 स्मययत्कनकं जना ॥ मय्यधिकं रंगनाजनसत्यागं वा घृतं क्लान्धन्यासका हात्कनकं जनं यत्नं यत्न
 लुधाऽकार्थक्यो न्याऽऽगुणनजलनसालोकं स्मययत् ॥ न ५ का रालयित्वा श्वकगुर्जवृत्तेन्द्यासकन ॥ १२
 मेलसमावर्कं भनधयत् ॥ जनमेव कभत्यागं कभनजनं ॥ मुनिवीदानाजिकठकगधकं समेव
 लुहिवर्तिकामधकत्वाकलदध्यामखवर्लीकाकभनकदकलंकं गृह्णसुननं विइकयवनिज
 नय

त्रिकविवर्जितं ॥ जननमदीकनसनकलयाद्वाकिरेवकि ॥ सद्यानवनिगमदीनगधकसादिकसदीन
 नसनामकं साव्वीलानीज्यालुनघट्यकटागयकभमूविकायोहि ननवालकासदिनं नवकिदा
 नादसवध्या ॥ सद्युक्ताक्यादीनागभा ॥ आवसस्ययथमविद्यागुहोत्वागुनिकाकानयत् ॥ यिचुनगनमून
 यीस्त्रावस्ययदकागुनिकारुक्कयित्वाविवरुक्कयत्नयस्वनि ॥ जम्बूवीजं विजयूनकं वीजप्रियविजं वृ
 लुयित्वा ॥ ज्जादीनगयायगं नधमन् ॥ घृकनरुक्कयत्ककयावदुक्तानस्वनि ॥ ज्मनकिक्कसम

त्यजं मास्तिव नाना लयन विलला ४ क ॥ ४ धना ४ स्थ ॥ कर्क न द क म क र्क म न द वा घु ना स्ति न क थ द
 थ न इ जा का यो क ॥ ५ ड गो य कि ॥ ना डि क ल क न य न्म थि यं क रि य य क र्क स्थ य यि गु न स न यु क र्क
 द झारू ॥ य न्म थि य न स य नी ॥ ॥ र्क ग ना जं यो य ल य न्म थि ॥ ॥ वु ॥ थ क ल वी ना स्ति थि न लु म
 ला ना य न क र्क थि व र्क ल स न य र ल ॥ १ ॥ द स ॥ ॥ ज थ र ग वा ना र्क ॥ ॥ थ ना य ना जि का म ल न्म
 क र्क ग व कि का य ल ना मी ल क न व सि र व कि र्क ॥ ॥ य न्म द डी व वा क र्क म थ ना लि ग म र्क थ र्क का म य द स

रवणि॥दलुखनामूलंलंकदद्यामूलनदद्यारुथा॥वक्रतुलिविदंगववाकदृष्टनागकसनंनान्मूलनदद्या
द्वगारवणि॥गदरुशुकयकगनंयीष्टाध्वजंलययीत्वाकामयद्वगारवणि॥जृदगंनसिगुनांनोख
दीनकिन्ननगीवाविदावयित्वागृष्मरुगमागलाभाद्वक्त्रांययवनिर्काहत्वागोलकनवसिकनटी
लोभावनान्मयंरुद्रसूभनरायनिलकनवजिकननं॥रुगमाजमूलभास्मशुकनांनोनागथा॥ध्वन
कनविनलगाककलासुवकनसदयद्यसानधूमनधूपयित्वाहोयंरुद्राद्वगारवणि॥मयन्नगिखा

काकजि कामन स्यनीर्मा ल्युक्कवृत्तयस्याधिनसिदीयक सावसा रुवकि ॥ लावे का हनिना नवि
नकाक विष्टयायी द्वा खानयानि दद्याद गा रुवकि ॥ विष्णु का कामूलनलिगलि द्वा न मरा रुधर्मा ॥ यूप्यनर
उनधूरुन स्यदल संयद नृ ज्ञ सवन द्वा न व कर्न रुक्मन य उ वि उनयूप्य मूलन मूलन स मरा ग वृत्त म
वृना वनी का कुर्या कटवध्या ॥ गायत्र नृ ना वृत्त न दद्याद ग र्ग व वृत्त न व सिकनन ॥ उमरु वृत्त न स्य द
नायादां गुल्या मर्का गान नया स्या ४ नामालिख्य क अ नृ कि जाया लि कि सा जाग वृत्ति निर्द्ध मा र्जा गायत्र

कमयूत्रगिख्यववागभयनखानेयानदद्यादसंकन॥ ज्यमाजि कमूलंयूषा (लाखायकार्यटसथकनव
कलननकयात्रेकजंलेयाननारुनादो नामुर्वेषयवगीकत्राकि॥ दछास्यलामूलंवाविगभयनदद्यात्
वगमानयकि॥ विउंगरुगवकस्य मदिनथादद्याद निष्कुनासयकि॥ मनश्चगिलानागकसलचुलुपीयं
गुनावाचनालीनकिमंमथदजिकनता॥ कमुनिलर्गालूधूडवसहदवालि कक नीलकं जेलाकवसमा
नयकि॥ उंचलविरुविलिश्चनश्चगामकश्चाहा॥ खलि (गायनित्रककनबीजस्यकसमस्यासह

अमर्कजयन्ता॥ नामवेदलोकायसाधयन्तामर्कजयन्ता॥ नमोऽस्तुते
 पूर्वसंवादसेसहजानीमामर्कजयन्ता॥ नमोऽस्तुते
 यूनंभसानलभक्तकुरुदध्याजशक्तसुनाहिसक्तिमद्वलाकु
 जगत्यालिङ्गभादायकद्याभभनपुत्रकठकनस्यवायुद्वयधनपुत्रकुरुन
 कसनाकुरुमथनधेय्यथारुठा॥ निधद्वयमदिउवापुत्रकुरुनमर्कमी॥ मूलगिर्ककोकि

१३

लाव्यस्यधुनस्थाथवाहनि॥ मर्ककुरुगिर्कथवर्कनाद्वकुरुनमर्कमी
 वधनाद्वकुरुन॥ स्वर्गनपुत्राभनवधयद्वकुरुनमर्कमी॥ कर्कजकानयीत्वाउवायनप्रय
 नयनविधनाकरोमर्कनपुत्रस्यधनलार्कमी॥ मर्कनकलननाकर्कजिर्क
 कालयपुत्रकुरुन॥ रुमिर्कनावर्कमधवर्कमीलनलनदार्कनपुत्रकुरुन॥ रुमिर्कनावर्क
 नलनकुरुन॥ नलनवायवधननयादधनयद्वकुरुन॥ मर्ककुरुनमर्कमी॥ मर्ककुरुनमर्कमी॥

यत्कनयायाः शुक्रं वा हृत्कुरुते न॥ गिरिकाकं धौ मूलं गिरिकयमकं सनसमधूरीनालीतया हृत्क
 मूलन॥ विष्णुका नाम मूलं यमनयेत वक्ष्यीत्याकरो वधयत् हृत्कुरुते न॥ हविना नलसांजन
 यानदविद्या नी संधवक्ष्यया नो विद्यायाः शालिगा कुरुते न॥ दुर्धनचली वक्ष्यते
 गंष्टनी यथा शालिगां जययश्च लिंला रवति॥ कथिक हृत्क मूलं दयिष्ट ह्यगमू उदयी शालिग
 लियमधास्यानथ दानययं नवनी गंष्टवति॥ ननादकय कालनात्मानि॥ कथं देका सनया

गद

नदयनयि लामखस्य यय हृत्कुरुते न॥ युगमूनं हृत्कुरुते न॥ शालिगन हृत्कुरुते न॥ ननादक
 छत्री गंष्टवति॥ जयधि मूलं कामा विमलं वृद्धनवीर्जं कथं देका सनया शालिगं जययि लामुयं कामय
 वति॥ संधवदं गतकथं नधा यय हृत्कुरुते न॥ मधूना यि शालिग यनिय कामय कुरुते न॥ कामा विमलं लामूलनमून
 नक हलि संधका यय नकुरुते न॥ यय हृत्कुरुते न॥ सिका संधवमि श्री हत्य॥ स्वगुरुं या तु लिंली यय न
 उरुगु लियवजधवे धविना जीवाल ययावसा कुरुते न॥ कथं देका सनया यय हृत्कुरुते न॥ यि यलि मधूरि

[illegible]

गरी। जयनं। अ। उमिष्टुमिगथादुदुलविहा॥ वायुथाग म। गयकगथा कानस्यनकटी॥ स्वययं
उस्यसादकनमसंवि॥ ॥ अथरुगवानाह॥ साधसाधकनयविचनस्ययाधधिया॥ गलि॥ अ
थरुसंयवदामिसर्वविहानगकेय॥ ॥ उंकासाकमावदमहसुहलाहलवजसुनयसर्व
मघवागवकीरुनयसुहलचय॥ ॥ सर्वयायानियं॥ अथयसुहल॥ ॥ अगसुहलचयनाक्य
आहहवाजवलाकय॥ ॥ उंकासाकमावदमहसुहलाहलवजसुनयसर्व
मघवागवकीरुनयसुहलचय॥ ॥ सर्वयायानियं॥ अथयसुहल॥ ॥ अगसुहलचयनाक्य

पुयकमकुतासनं वंशं मुखं कील २५ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

वलुमहाभादी २५ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

[illegible][illegible]

[illegible]

वउठयादयकीकानंमुखमध्यनगरंदिशकनिखासाधकंनस्यदृष्टनशायत्रमात्रामरुतावक्षाय
 जालुथासमालरुन॥कुष्ठकायमीसंयकर्मनर्मोभिष्टादयकिनकसुगनसंवद्यादयुजनवीकि
 यलादयदामयादनजमर्कभवजमानयसकवाजाननकमयंरुमरुमनि॥ईवीवीमीनिललिकई
 रुदा॥वउठसुकावननधनि॥ईहुंहुंहुं॥अधय२धोवंधय२उंउंमस्तथायदईरुदा॥गवास्त्रिकील
 कसुकायुलपलमादीमशरुनकासीमलिगगा॥इनीसनकीनीनयवन॥उंवजितीवजीयागयसुनयय

की जात्रय २३ उचुमहाभाषत हं हं वात्मिकया मृत्तय वरु मरुगतासीमनुगं यथागात्रगायययत्वनप्र
 वकि ॥ ३० ॥ की ॥ यं यं मयमजाक २ ॥ अरुय २ सर्व कार्ये वसाधन हं २ हं हं हं ॥ लजय ५ लीधन ६ वी ॥ केरुज
 वंरुमसनिरुपा ॥ की ॥ सुरुसुवकाभा ॥ कुरुते यतः ॥ गजमदमशानकव ॥ सुलानक ॥ कुरुमविदहय ॥ नमडाः
 कुरानी ॥ ३० ॥ भिनसि की ॥ हदय ॥ ना लो नं मदन ॥ सा लाम ॥ कुना व ॥ शानक ॥ स ॥ व ॥ सर्व ॥ ह ॥ उ ॥ य ॥ नू ॥ व ॥ क ॥ य ॥
 ल ॥ गं ॥ य ॥ क ॥ य ॥ द्वि ॥ य ॥ लो ॥ घ ॥ क ॥ म ॥ ध ॥ य ॥ नि ॥ क ॥ म ॥ द ॥ न ॥ न ॥ व ॥ र ॥ व ॥ यी ॥ ल ॥ न ॥ क ॥ स ॥ ॥ व ॥ गि ॥ न ॥ स ॥ न ॥ नि ॥ स ॥ न ॥ व ॥ म ॥ वा ॥ द ॥ ना

८९

कायजयक ॥ यववि सति सुरुजनयन ॥ वनि ॥ अक ॥ २ ॥ मा ॥ ह ॥ य ॥ २ ॥ अ ॥ न ॥ की ॥ भ ॥ व ॥ गी ॥ क ॥ न ॥ खा ॥ ह ॥ ॥ उ ॥ द
 न ॥ कि ॥ रं ॥ गु ॥ क ॥ व ॥ ल ॥ क ॥ वा ॥ गु ॥ क ॥ ना ॥ मि ॥ का ॥ न ॥ का ॥ ल ॥ यी ॥ व ॥ टि ॥ की ॥ ला ॥ सी ॥ म ॥ य ॥ घा ॥ न ॥ या ॥ न ॥ द ॥ घा ॥ द ॥ गि ॥ र ॥ व ॥ नि ॥ ॥ उ ॥ ग ॥
 क ॥ य ॥ की ॥ गु ॥ म ॥ न ॥ य ॥ की ॥ घि ॥ ना ॥ ज ॥ द ॥ की ॥ म ॥ र ॥ क ॥ स ॥ य ॥ मा ॥ ल ॥ यी ॥ अ ॥ न ॥ न ॥ व ॥ ल ॥ न ॥ वि ॥ व ॥ र्ति ॥ नां ॥ गी ॥ य ॥ द ॥ य ॥ द ॥ धा ॥ व ॥ नि ॥ म ॥ द्वि
 की ॥ गी ॥ ॥ ३० ॥ ॥ अ ॥ न ॥ ग ॥ र ॥ ध ॥ धी ॥ ला ॥ दि ॥ वि ॥ य ॥ व ॥ न ॥ यि ॥ नी ॥ ख ॥ १ ॥ हं ॥ २ ॥ हं ॥ स ॥ १ ॥ उ ॥ च ॥ ल ॥ म ॥ हा ॥ म ॥ ना ॥ हा ॥ य ॥ य ॥ नि ॥ खा ॥ ह ॥
 अ ॥ ध ॥ वा ॥ ड ॥ स ॥ का ॥ नी ॥ ती ॥ व ॥ हं ॥ हं ॥ हं ॥ ॥ स ॥ र्व ॥ वि ॥ ष ॥ ना ॥ स ॥ य ॥ नि ॥ ॥ उ ॥ ना ॥ गा ॥ वि ॥ वा ॥ स ॥ न ॥ ह ॥ न ॥ ४ ॥ ह ॥ ॥ अ ॥ नि ॥ म ॥ कि ॥ न ॥ म ॥ द ॥

जाननी नृकाया स यो उच्यते ॥ ४ ॥ उं जानका न जन्म कं वसी कनू खासा ॥ स गन्धर्व नृयूषा दाना दधी
 कननं धनभा वि कनू गाय मेरी यं सिंह लावन नी खासा ॥ उदक नाली मखि नन व इना पुहल लय
 नाली मित्रं हने कि ॥ संहन खर चरुं खादना न्न य हवनि ॥ आदि स्थन थव गव वा स देव वनन वा ॥
 गनू उय कि या नन रु म्या ग हू उ वि र्प खासा ॥ सय वि शिक कं ददि वि वना सय कि ॥ उं वा म ॥
 अजि नू जय नाजि न कि शन क २ खासा ॥ सफा ली मखि नन न व उ दि ग नी दो थ नू ॥ एक स्व स्थन

८२

स्थापयन् ॥ उं ज मूली रु मूनी भाहनी सर्व इक्षु य समनी खासा ॥ चो निन यर वनि ॥ नम च उम हा का धाय
 रुन २ च नू श कि छ २ व ध २ भाह २ रुन २ ज मू ग हूं रुद ॥ यूषा दी कं य नी रु य दाना द सामान यनि ॥ उं न
 म ४ न ल य या य ॥ उं ८९ म वि स्म य खासा ॥ कन कि य ज पि नि क या सर्व रु रानी न भय नि ॥ ॥ रु ह्य क
 स्त्री ना खी थि च उ म हा वा य न रु नाना वि रु द नि ग दि रु य रु म रु य न वा वि ग नि रु म ४ ॥
 अथ रु ग वा ना रु ॥ ॥ उं च उ म हा वा य न सर्व मा या द र्ग क सर्व मा या नि र्द ग य नि वि धन हूं रुद ॥ अ

मनसुं ॐ महाभाषत ध्यात्वा सर्वकुर्यात् ॥ ७ ॥ इत्यनकीवननकयमसु क्रियात्वा नीवधं सनेतुं सुकैलसं
पिष्टान् स्मिन् क्रियावर्ति कां कानथम् ॥ ८ ॥ एकनदीयकालानां जलनिक्षिप्तं ॥ नाशेन नयसुनं खलु
क्षयनीयं यद्वा कानथविशुद्धता न्दग्भयति ॥ मृगयन विनो जलकचूर्णं सहि मला जलं क्रिगवर्ति वात्
नासि यमं दृष्टान ग्ना र्वीति ॥ ९ ॥ एकन कर्तुं च कृमिना दा सन का ॥ हला हल सय स्थ ला गुप्ती दृश्य
न ग्ना मूक सिखा या वल्ल उनी गा वन र्क य नी र्कं वल्ल मा यव उदय धू उ नू य या ग य थ कं मा से के क

न शिष्टमस्ति न ला कानि किं न व ल्पव स्था दी य द्वा लं ना स्तु व न ह्या कि नं दृष्ट य पूर्व व दा त्म न का ४५
खा ट क म र्वा व द नि मू लं व कि क थ गृही स्थ य य क ल रं र व न् ॥ धू लु न य य म ध सृ गु डं कः
गु ग य य म ध य द्वि य या न मा ग न नि व र्ध म र्वा र व नि ॥ का क्ति क न य न मा क ४॥ ॥ क र्क नी ग
रं ग र्या न था धू यि नं व द्धि र्ग म य न पि द्दं स य ॥ अ मि र न वि रं द न ति अ व स य न मा क ४॥ का
क ह द य न धि न ध श य न न य क न ख न्या मी दि स्ता म लं य स्य वि द्या या य क्रि य स्त का क न.

खाद्यन॥ ॥ उं का क क रू नी व र्द्ध नी य व द रू का के न रू का य य स्या हा ॥ र ग का र्ग रं रू का
 मुं वि द्या द शि क य ति का यू नां प्र क्रि य रा य थ न ॥ न स्या मार्ग म्वा ध न ॥ मू र्दि की प्र रू वि रू गो न न ल म
 क ॥ वि द्या नू हा ॥ अ ग र व ति मू र्दि क न मा क ॥ वि ग री ग रं ग र्ग ना वी ग रं ग रं रू यो द्या र्ग व य
 कि मो वि ष न द श न मा कि क धू य न मा क ॥ इ द क य ल सु द क न मू र्दि ना रं व द्ध रू व यि रू स
 र रं य का क र्ग य वि र्द्ध न द श न रू य क ल ना रू ॥ मु ग रं ग र्ग यो यो ध पा वि रू य रू द य ति

गुणं लब्ध्या स्मा कृष्टा एक के लन व कृत्त मे ना दृष्ट व गत गच्छेद गच्छ ॥ दीयानर्था ता योग ध क वृत्तु दा
ना स्युन कृत्त नि ॥ मृत्तु वी गवाल ज लोक रु क भरी ४ या दो क पी ला क द नी य उ ता व द्या क ल द गा भ य न
कि न कृत्त ॥ नृदि मूलं गु ठ न रु क य नि डा रु व नि ॥ का मा वी न गि खा या व ध ध न नि डा रु व नि ॥ ना ग द न
न क मूलं डा रा यू य न रु नि डा मं ड ल व यी क्षा दी र्क ना इ द क य नी का या रु य ४ ॥ भ र्म लि मू न दि गु गु लि
का ख न ना स्य या न न ॥ कां गु ष्ठ मा दि न या द द्या स्म वूल न वा वि न य न रु व नि ॥ नृदि क्री व भ क्क वि जं व

॥ अथ कुरु उन्नर काना डक्कियनकी ॥ ब्रह्मद्वीपुर्देन धातु कस्य नागा यत्र यदा दानेन कथानी ॥ अथ न
 पकानेन नासा साया दानव्यं भा कठ ॥ कनकी मून सिन गिव धधरः खड्ग मूल रसु ना ल मून मधः पूष्य
 न कर्षे ॥ एतया थ उरु व दोयान एम मक गि धा रुत्वा यथा धी च कि वि स्थि ला पी व हु सु घा क न रु व नि ॥ २४
 ना कवी जं पूरु या इ का व र रु वि ना क था र्ज न न म र्ज नी ॥ अथ धी व वृथी ला जि का न न रु य थ रुः रु क
 रु न रा इ न द रु कि ॥ मरु का कान पू रु रु सि म लु पा रा रु रु य व नी ॥ अथ यथा मून पूष्य उरु रु ग वः

घ. रुत रा य गि न सा दो व ध थ रु उरु य धी व रु य वा न य ति ॥ गृध व सा उ नू क व सा ला च र्म या इ का ना
 नू र्मा गी व इ न ग म ना म न रु ग व ति ॥ मूर्ध प रु ल म ग मु रु रु रु दी व स र्म धा या म धि वा स ग रु न मू क
 गि र्वा रु त्वा वा म ना या नि ना गृ की या रु मी न रु य न का व रु ग व ना मा वा म रु दा का र्थे य स्य न क न
 रा व यि रु ग ड क सि व न ग मा स ना रु न क न द सि सा न द रु ल कं रु रु भ ना व धि ग रु ला रु रु यान
 क रु रु द ग म क मा सा नै रु न क न स व न न इ य ल ना दी रु व न रु ला पू न रु न का व नी च का र्थे रु य नी स न

हृन्मखाकियागदामकंरावयत्॥गाहृभाहृवतिशिवाहृवशीरुनाहृहो नरुहृदंशोसाहृसाहंस
कृपयासायाहृसाहृदयंयक्युंजायथासासाहृविविहृदृगागनेहृगायमावीनुरुंमासी॥मृकयात्र
गाभावनानककायासाध्याहृमिमानोख्यगहृवगन्नामविदृशीगंसाहृकनीकहृदितियकयाभनसंपूनी ८६
हृहृमृककमृगयवयासिहृकनवध्रीजयहृविहृगभगायथनाओयावसिहृनविहृयममृनक
यामयानयनि॥उंआकहृ२भाहृय२अमृकिमाकयंयहृ४स्वाहा॥कयीहृहृनवृहीहृयमासीहृद

धारावयत्सुवावानननराहृसिहृगंयगंयुउककिंविहृयक्यकनमाइनदधिरुवनि॥कयिहृहृन
यिहृमृकनराहृनययहृहृधंपायथस्मथवहृदध्रीरुवनि॥अयकघहृ२धमावहृशीगंयावय
घाकनदधिहृयंयहृघहृरुजयहृदधिघहृरुवनि॥अकृकीनेननवघहृविरायवहृधानहृकियं
ऊनककमीवहृधन॥सुप्रथमयमृदिनदसदिनरुभगृहोत्वामृहोदयनाधार्कविन्यासनजव
यविहृग॥कनहृउहृरुस्मवरायाउदककूरु४उयानिजुधारुभनरायायनयनि॥नविदिनगावि

वीमूलमयामार्गमस्योक्तं यथैकजिनदत्तु। नो कथं धर्मो नो यथैक। विद्वान् विज्जवा ला मुद्धि न घट
कर्णो दं ड जल युक्तं यान न्न यम नंति ॥ न न वनी य व य य का भो ह ना र्जु न न म र्जु नो ॥ रु मि न ना ख धा
रु धा ४ वृ र्ण गै ल वि म र्दि नं क र्णा न न मू य वि य न नं नै दा नो दाल ति ॥ ना मु र्ता ज न व व न ना म को य क थि र्वा
ला ह ला ज न ना मु मी व द्ध थ क ॥ न का १॥ रु इ ग ध गिला य र्ण दाना दाल ति मि र्वा ॥ स र्वा व वि ज्ञा य नी ल
घू य र्वा दी कं स र्वा य जल दाना इ र्वा नी ॥ क र्णी ना रु ति व न क का ट न य म न प्र क्रि य जा का र्ण थ ज

८१

किञ्चनमिस्सुस्समस्यत्तु न क ४ नै ल न पि र्वा वि नं जल र्ण जल ति ॥ ॥ रु र्वा क र्ण वि ना र्वा यी व उ म रु
प्रा य न न रु क र्ण ना य ट ल ४ न क वि न ग ति न म ४ ॥ ॥ ज थ र्ग ग वा ना रु ॥ रु दि वा र्ण गु उ य र्वा ४ म म ना
ना म रि द न क उ दान ४ क र्ण द स रु य र्वा ४ स र्वा स र्वा न ग ४ ॥ न य म र्वा य ध ना र्ण यान वा य रु दि र्वा ४
न य र्वा स र्वा द न जि व न स र्वा ज रु व ४ ॥ य ४ म स र्वा दि धा र्ण न प्र र्वा कं द रु म क व उ र्ण रु व रु न रु य
नै ग क र्वा ४ ॥ रु दि न र्वा र्ण वा रु न व क्रि म रु ल मू य र्वा म र्वा र्ण वा रु न वा य म रु ल मू य ४ ॥ मा म र्वा

[illegible][illegible]

वसवश्चमी॥ नागं यो विरुधाध्यात्वा यानीयात्सर्वं गन्धकं॥ त्रिकायां विरुधाध्यात्वा इमां स्वादं यवकं॥
स्वार्निगायु रथाध्यात्वा जानियात्सर्वं स्यर्गं नसिभामध्यात्वा सर्वं सामर्थ्यं वर्द्धनं॥ यश्च गजस्थि
नीं विरुधायुना समाविशुक्तं॥ निवर्द्धनं च कुरुते वनदेवयुनिर्विदनाभानिकं यो विरुध्वमानगस्तथा उ
द्योगनं सर्वं वेलावकथानेव यस्मिन्॥ कुरुमादिकं यथा गानव उदिश्येति या जयम्॥ वाभाभाकिनी ह्ये
कुरुकनवसिकनाम्॥ दक्षिणकर्षीनीरुथायवकननी जातिनी गाललाटस्तु उयादृष्टिमानदीनव

कनसा॥ नास्वयस्तिगादृष्टिस्तु निरुक्तं कनरीकुरुकादियनायुष्यमृद्विदुवयवकं भावकं सन
सिदुक्तुमुक्तं सत्त्ववदुविनिर्गयाही यन्मासं यवदृष्टिनी याजिनं सर्वं सामर्थ्यं कुरुसिद्धिः
विरुधाधकं॥ विरुस्यवाधनादाध्यावायावाधश्चवाधनाम् विरुस्यायिरुवडाध्याज्ज्यायगानिच
यो गतायुस्त्रयायै कथा गानव जयप्रसमागमा॥ नीमद्वामूर्ध्वं रुजनसिद्धिं साववक्तुं वज्रसत्त्वादया
वद्धाया सत्त्वाय नस्यमद्विदा॥ कीपूनसाकि कादवी कीलीता गदनादयः सुगुह्यं सर्वं गंधधूमयान

येव मासे धात्रा सिकाव का सयदि ने ४ दय निम्ना यकृता जिह्वा म धा कृत्तु ययादिना जनन खय क
गाड क ताद गे ना छ मा से धा द क गा वा छ मा सन मन्ध यद गे ना छ मा से ४ गी ता दो का न वी व र्ये या
सर्व शब्दि द गे ना यकृत्तु र कान स्य निगा द गे ना गृ ४ का न य उ छ द गे ना इ गा ह न ज ना मि का म ल द र्क
स वा द गे न ना द स दी न न ॥ द हा य मा कृत्तु ग द य ग ४ स र्वा कृ गी ता व द सा ह न न्ना ग मा य स द ह्या द
या दि मा सन १ गा उ इ र्ध्व धा दी शी वा ज त गा उ रू पा दि ने क न ॥ वा मा व र्क म ४ क र व मा सन ना र वि य यो था

ह्य क र ह न ना गा धा द गे ना य र्क स न न गा गु नी यी उ न धा मि व द गे ना दू क दो ने ४ ॥ क र्क धा न्य क र व र्वा ता व
य व कृत्ती यु र्ध्व नि वा द र्से ना य कृत्ता ४ ॥ ज र्क ल्प ता न दू य कान य न ला क वि क थ न् ॥ ॥ ४ ॥ क र्क ल्प वी ना थ
यी व तु म हा वा ख त क र्क मृ कृत्तु क द य द न ४ य वि ग मि व म धा ॥ ज य र्ग वा ना ह ॥ मा र्क यी र्क स मा था
गा य क र्क ना स क ४ ॥ म्था द था मा ल न या ग म ४ ॥ जा य क र्क व स ल्प र्क या था स क र्क य न ४ ॥ ज स्ति व न्वा र
व व ज स र्वा सा स स र्क व ४ ॥ ज्मा गु थारु य द ह ४ स ल्प ना क र्क र्मी मि क ४ ॥ मा या य म स न या र्क ग ध

घेनगनायमः॥ गकवायसमवायं जलवद्रायमामकः॥ ॥ ७ ॥ कसवीनाखयावउमसना
 खरागदहस्वययटलशुविगविरुमः॥ ॥ अथरुगवतिशारः॥ अगठयनः आउमिदामि
 यरुयात्रमिनादयः॥ प्रसादकूभनाथसंक्रियनानिविरुनी॥ ॥ अथरुगवतिशारः॥ अथागस्तयव ७२
 कामियरुयात्रमिनादयः॥ सत्वययेकीविदवीधाउसादवयस्मतिः॥ नीलवर्तुमसरागजः
 काखनवमूदिनी॥ नकयभाघनास्यलीलयावामरुलकः॥ हिगकामधुउः यमचद्रायवी

हिगो॥ यीभान्नगद्वीरुषाविगालाकीपीयवदासहजानदसमाधिरुदयिभगाकुलावयनः॥ ॥
 रुंकात्ररुनसंरुगाविधवजीरुथागीनिशासवयकुउकायागीकुर्वसिद्धिमवायनः॥ अथवाला
 र्गोघेवापीधीकानसंरुवा॥ मदिनागधननेवपीगावजधरुखनी॥ नलगमूदीगावजीरुनकावा
 कूनीरुलिका॥ अमिगारुमूदिनीदवीरुदीकानरुनसंवाले॥ गानावाधमवर्तुकरुगाकानरुन
 संरुवा॥ अभाघमूदिनीयायायवयमानवः॥ सत्वययेकसवरुसोम्यनयनसंरुनः॥

स्वर्गयागध्वजः पीमात्रालिगलिनयदति ॥ स्वकूलियनकूलिवाथकन्यागुच्छप्रसावयत् ॥ जननसिद्धि
 कथा निमृदयानेव गस्यठ ॥ अथवायति कृत्स्नित्वासाधयत् मृदुजादिसंस्कृतान् ॥ सहजवत्समाधि
 स्थुजयदकागमानं स ॥ कथायं जयमकु ॥ ॥ उं विश्ववर्जी ॥ जागद्वृक्षं स्वाहा ॥ उं वृक्षस्य स्वनि
 जागद्वृक्षी ॥ स्वाहा ॥ उं वृक्षस्य निजागद्वृक्षं स्वाहा ॥ उं वृक्षस्य निजागद्वृक्षी ॥ स्वाहा ॥ उं नाग
 गद्वृक्षं स्वाहा ॥ ॥ अथानस्य वका मित्रकस्वविन सुमलुल ॥ वृक्षस्य वृक्षवत् वृक्षस्य वृक्षवत्

५३

लिङ्ग ॥ पीतवर्णं कुरु कुरु मय्ययं वृक्षवत् ॥ कस्वालोदनध्वजं नेपाथनकसंतिरं ॥ वायुययि कवर्तु
 दुग्धामामीसानकालिक ॥ मध्यावेष्टुवर्तु उरुतायं युकल्ययत् ॥ मर्यास्तुवाथवाधमपीतं वान
 कभवताः स्यामं वायं वलीवृक्ष न कन्ययविचि कथत् ॥ लावनामत्रिका एव द्वाष्टा कविधाविटी ॥
 वामदक्षिणकनाख्यावेगत्रवत्ता कन्यप्रता ॥ नेपाथयो पुनादवीधन्योनध्वनानकावायुव्यकालि
 उमोमकिपीकसंतिरं घटध्वनिस्वाहस्ती ॥ ग्धामाभं भनकानक ॥ लाविटीवनदास्यवाम

भास्वत्तन्वाविती॥ न तावद्वासनाः सर्वेऽप्यर्थकसंस्तिगाः॥ न गव जीन्यस्यैव द्वावग ककतासना
 खर्जस्वयध्वानकाश्च यवजिउदकि (लकटं न कनी धनीतीजीय भन क ताविरुनी॥ यश्चिममान
 वजिउयलेवजधवीकली॥ मयनयीवृकीवसोउवनूतस्योधामसंनिता॥ उरुन माहवजिउनर्ज
 न्या॥ कर्धवीती॥ पीनवर्तुलु कवलस्यस्युन्या गवेरुश्यासमत्वमी॥ यत्नातीहयदसिर्वकक्षाम
 कायिमर्द्धजाक्षावत्वाभाहसुघटाका (लकटं या यीकसनीसा॥ उंज्मृगहसुघटदवीयस्वाहा॥

२४

जस्याहावनमाधनयागिन्यसूत्रमन्त्रिगः॥ नेशाकस्तिगसुतीसर्लकोयवभभवनः॥ अथान्यासैव
 क्रामिकलुनायराहावनो॥ विश्वयथादवदवकत्यथञ्जलुनायती॥ वामदवर्तवद-गोनकवर्तु
 कुनेशश्च॥ पीनकामदवकुधाममादीननामक॥ वायव्यककुवलेकुकायि-सासूनसैरुकी॥ क
 र्तीखर्जकन्यायनसंस्तिगालीद्यायादनः॥ गवजियश्चिमादवीस्तिगावेयलेभावनी॥ जस्याव
 धानयागानदव्यमघादीयजथा॥ ववधजसुधेदवानकियून (लेनानवनागू॥ ॥ नशांयम

ॐ॥ उंचुमहाभाषतवधयश्चमूकं कंदु॥ यिनयायूरुयूकं वामव (स्य) गायमया॥ भाववे चउम
 हाभाषकुलकाया कसुयाथलिवा॥ सिध्माकं क ज्ञानदवजया गिगिरावनायलिनी छिउवधका
 वलादी चरावजगाधयत्तकवीजनायिविनाध्यायादकविरुसमाहिगः पीवन्नु जेशनखाय
 नलियुनकुचुमचकमनयिसर्वावसिंसे सुगाआगिनी हावय दवना कर्गिः जथवाकवनस्वर
 ओगिनीवन्वनदिगैः गारावधिराव गा लो रुयावधिसूटगास्वज नृगकुंडुम्भगा गिमराम

दससिद्धिनि॥ ॥ ॐ ह्यकलवीनारयणीयतुमस्तुभायतनकुदवनीसाधनयदलयक
 विगनिकमश॥ ॐ ॥ ॐ दमवाचकुरुगवानावजसखम्भवः आगिगनाहगवकासाधिकनिश्चन
 दनिनि॥ ॥ ॐ ॥ ॐ ह्यकलवीननामधुमस्तुभायतनकुदयनिसमाय॥ ॥ अधर्माहृदय
 ह्वाहृदहृदवाहृदवागकध्वदगयावध्यानिनाधजववादिमस्तथमद॥ ॥ सच्चिदानन्दमि
 रादववादिद्रुसधयसुकसिद्धयानाशलागुर॥ ॥ यादृगंयूकं दृष्ट्वा नादृगं लिखितं

धातुदिसूत्रं नाम सद्धिं बालयका क्षायमस्ति ॥ २७ ॥ ७ ॥ २७ ॥ स्तु ॥ ७ ॥
 लिखितं लगी गुरुल नाम कडादा लगी गुरुल नाम कडादा लगी गुरुल नाम कडादा
 कडादा लगी गुरुल नाम कडादा लगी गुरुल नाम कडादा लगी गुरुल नाम कडादा
 कडादा लगी गुरुल नाम कडादा लगी गुरुल नाम कडादा लगी गुरुल नाम कडादा
 कडादा लगी गुरुल नाम कडादा लगी गुरुल नाम कडादा लगी गुरुल नाम कडादा
 कडादा लगी गुरुल नाम कडादा लगी गुरुल नाम कडादा लगी गुरुल नाम कडादा

56
95
25

25 5

ASHA ARCHIVES

2758